Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 18 • 6 - 12 फरवरी, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 04-02-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

अर्हत उवाच

सामाइयमाहु तस्स जं,
जो अप्पाण भए ण दंसए।

जो भय से विचलित नहीं होता, उस साधक के सामायिक होता है।

बायतू में हुआ १५९वें मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चतुर्विध धर्मसंघ को पढ़ाया मर्यादा और सुसंस्कार का पाठ

संघ एक साधन और मूल साध्य है आत्मकल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

जय-जय शासन - जय मर्यादा

संघ पुरुष - चिरायु हो

बायतू, २८ जनवरी, २०२३

माघ शुक्ला सप्तमी–१५९वें मर्यादा महोत्सव का मुख्य दिवस। हमारे आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने अपना अंतिम मर्यादा का लिखत वि०सं० १८५९ माघ शुक्ला सप्तमी को ही लिखा था। उसी मर्यादा के लिखत के आधार पर प्रज्ञापुरुष जयाचार्य ने आज के दिन वि०सं० १९२१ को बालोतरा में मर्यादा महोत्सव के रूप में स्थापित कर धर्मसंघ में एक महोत्सव को प्रतिष्ठापित किया था, जो लगभग प्रतिवर्ष हमारे पूर्वाचार्यों व वर्तमान आचार्यश्री द्वारा निरंतर आयोजित किया जा रहा है। पूर्व में आज का दिन माघ महोत्सव के रूप में जाना जाता था। आज ही के दिन बहिर्विहारी चारित्रात्माओं के आगामी चातुर्मास की घोषणा पूज्यप्रवर द्वारा की जाती है।

मर्यादा के महाशिखर आचार्यश्री महाश्रमण जी के द्वारा अर्हत् वाणी के मंगल स्मरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुनि दिनेश कुमार जी ने संघीय घोषों का समुच्चारण किया। 'भीखणजी स्वामी भारी मर्यादा बांधी संघ में' गीत का सुमधुर संगान किया गया।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

✦ *सही दिशा में शक्ति का नियोजन करने वाला व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

बायतू की धरा पर १५९वें मर्यादा महोत्सव का भव्य शुभारंभ

निष्काम भाव से पवित्र सेवा करने वाला स्वयं को लाभान्वित कर लेता है : आचार्यश्री महाश्रमण

बायतू, २६ जनवरी, २०२३

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु द्वारा माघ शुक्ला सप्तमी वि०सं० १८५९ के लिखित मर्यादा पत्र के आधार पर मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया जाता है। यह आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित तो था परंतु इसको मर्यादा महोत्सव का स्वरूप चतुर्थ आचार्य श्रीमद्‌जयाचार्य ने बालोतरा में प्रदान किया। इस बार मर्यादा महोत्सव के शुभारंभ पर गणतंत्र दिवस का संयोग भी है जो भारत के संविधान से संबंधित है।

मर्यादा पालन में सतत जागरूक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चतुर्विध धर्मसंघ को पावन दिशा-निर्देश, पावन पाथेय प्रदान करते हुए मंगल स्मरण के साथ त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव के शुभारंभ की घोषणा की एवं मर्यादा पत्र की स्थापना की। संघीय घोष व शासन गीत 'भीखणजी स्वामी भारी मर्यादा बांधी संघ में' का संगान हुआ।

परमसेवी परम आचार्यप्रवर पावन ने फरमाया कि आज जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के मर्यादा महोत्सव शृंखला में १५९वाँ मर्यादा महोत्सव शुरू हुआ है। इसमें सेवा के बारे में प्रस्तुतियाँ और नियुक्तियाँ की जाती हैं। सेवा जीवन और आत्मा की पूँजी होती है। जो निष्काम भाव से पवित्र सेवा करता है, वह स्वयं को लाभान्वित कर लेता है। वैयावच्य द्वारा तीर्थंकर नाम गौत्र का बंध कर सकता है।

हमारे धर्म की सुंदरता का एक अंग सेवा है। हमारे साधु-साध्वियाँ अनेक रूपों में सेवा करते हैं एवं सेवा के लिए समर्पित रहते हैं। विभिन्न संदर्भों में सेवा देखी जा सकती है। उनमें परिचर्यात्मक सेवाप्रमुख है। व्यवस्थागत सेवा का अपना महत्त्व है। प्रकृति, विकृति और संस्कृति ये तीन शब्द हैं। सेवा अच्छी तरह कर दी वह प्रवृति है। जिम्मेवारी से सेवा न करना विकृति है और बिना सेवा के आदेश के सेवा करना संस्कृति है। हमारे धर्मसंघ में प्रकृति और संस्कृति विशेष रहे, विकृति न आ पाए। समणियाँ भी सेवा करती हैं। सेवा की भावना हमारे भीतर तक चली जाए। साधु-साध्वियों ने सेवा के लिए अर्ज की है।

अनेक साधु-साध्वियों ने तीन साल की सेवा कर अपना कर्जा उतार दिया है। कईयों ने तो उससे ज्यादा सेवा भी की है। हमें सेवा के प्रति यथौचित्य जागरूक रहना चाहिए।

अगले कार्यकाल के लिए सेवा केंद्रों की सेवा की घोषणा करते हुए फरमाया कि लाडनूं साध्वी सेवाकेंद्र का दायित्व साध्वी लक्ष्यप्रभा जी बीदासर समाधि केंद्र का दायित्व साध्वी रचनाश्री जी, श्रीडूंगरगढ़ सेवा केंद्र का दायित्व साध्वी संपूर्णयशा जी, गंगाशहर साध्वी सेवा केंद्र में सेवा देने के लिए साध्वी शशिरेखा जी और साध्वी ललितकला जी का ग्रुप संयुक्त रूप से दायित्व संभाले।

साधु सेवा केंद्र, छापर के लिए मुनि विजयकुमार जी जैन विश्व भारती सेवा केंद्र के लिए मुनि रणजीत कुमार जी के सिंघाड़े को सेवा देने के लिए नियुक्त करता हूँ। उपसेवा केंद्र हिसार में सेवा देने के लिए साध्वी शुभप्रभा जी के सिंघाड़े को नियुक्त करता हूँ। जैन विश्व भारती तो एक तरह से महा-आश्रम है। सभी वृद्ध साधु-साध्वियों को चित्त समाधि मिले।

उपासक श्रेणी भी सेवा करती है। कई-कई उपासक तो अपना बहुत समय ज्ञानात्मक-साधनात्मक कार्यों के लिए नियोजित करते हैं। संयम का भी विकास होता रहे। ज्ञान-प्रेरणा में समय नियोजित करें। कहीं संथारे के समय संथारा करने वाले को सहयोग कर सकते हैं। पर्युषण ही नहीं बारह महीने ही सेवा देने का ध्यान रखें। धार्मिक सेवा का अच्छा लाभ ले सकते हैं।

सेवा लेने वाले सोचें जितना हो सके कम सेवा लें। सेवाग्राही और सेवादायी का जोड़ा है। श्रावक समाज में भी अनेक रूपों में सेवा दी जा सकती है। चित्त समाधि का मौका मिलता रहे। व्यवस्थापक सेवा में भी समय लगाना होता है। धैर्य के साथ काम करना भी एक सेवा है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी एवं मुख्य मुनि महावीर कुमार जी भी बहुत सेवा दे रहे हैं। इनका योगदान मुझे मिल रहा है।

आचार्यप्रवर ने आगे फरमाया कि हमारे शरीर में कितने अंग कार्य करते हैं, तब जीवन की गाड़ी चलती है, इसी तरह हमारे धर्मसंघ में भी बहुतों का योगदान है। मैंने नियुक्तियाँ कर दीं। सेवा वे करेंगे। मिलाजुला काम होता है। कम-ज्यादा हो सकता है, बहुतों के योगदान से कार्य संपन्न होता है। साधु-साध्वियाँ हमारे हाथ हैं, तो श्रावक-श्राविकाएँ हमारे पैर हैं। हम खूब सेवा में आगे बढ़ते रहें, सेवा भावना पुष्ट रहे। स्वास्थ्य का सब ध्यान रखें।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित जयतिथि पत्रक एवं मित्र परिषद कोलकाता द्वारा तिथि दर्पण भी पूज्यप्रवर को समर्पित किया गया।

परमार्थ की चेतना को जगाने का माध्यम है सेवा - साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में एक यूनिक पर्व है—मर्यादा महोत्सव। यह संपूर्ण जैन समाज का आकर्षण बना हुआ है। पूज्यप्रवर विशिष्ट घोषणाएँ करवाते हैं। यह घोषणा सुषोघ घंटा है। साधु-साध्वियाँ जागृत हो जाते हैं। सेवा परमार्थ की चेतना को जगाने का एक सशक्त माध्यम है। जिस संघ में सेवा होती है, उस संघ में एकता स्थापित हो जाती है। तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित साधु-साध्वी सेवा के विषय में निश्चिंत रहते हैं। आचार्य सेवा के लिए प्रेरित करते हैं। सेवा को महत्त्व देते हैं। सेवा हमें निर्जरा के परम लक्ष्य से करनी है।

मुनि कुमार श्रमण जी एवं साध्वी मुदितयशा जी ने सेवा के महत्त्व को समझाते हुए साधु-साध्वियों की ओर से पूज्यप्रवर के भी चरणों में सेवा की अर्ज की।

उपासक श्रेणी द्वारा समूह गीत की प्रस्तुति दी गई।

पूज्यप्रवर के स्वागत में बायतू मर्यादा महोत्सव समिति द्वारा मर्यादा पत्र का प्रारूप पूज्यप्रवर के करकमलों में अर्पित किया गया। तेरापंथ सभाध्यक्ष राकेश जैन, प्रमोद भंसाली, तेयुप अध्यक्ष महेंद्र चोपड़ा, महेश्वरी समाज से भंवरलाल टाबरी, अंशुल छाजेड़, अर्चना बुरड़, नरेश नाहटा, नैनमल कोठारी, रौनक बुरड़, कानराज बालड़ परिवार ने गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ समाज एवं कन्या मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी द्वारा किया गया।

समय का सदुपयोग कर उसे सार्थक बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमणी

बायतू, २९ जनवरी, २०२३

मर्यादा महोत्सव प्रवास के अंतिम दिवस जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि चार दृष्टियाँ होती हैं—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव। एक पदार्थ का विवेचन इन चार दृष्टियों से किया जा सकता है। इनमें काल भी एक दृष्टि है। काल यानी समय।

हमारे जीवन में समय का बहुत ही महत्त्व है। समय हमारे लिए सहज है और फ्री में मिलता है। हम समय का मूल्यांकन करें या न करें पर समय का मूल्य होता है। जो मूल्यवान चीज है, उसका अवमूल्यन किया जाता है तो वह भी मानो बढ़िया बात नहीं। गुरुदेव ने एक प्रसंग से समझाया कि किसी का अवमूल्यन मत करो। वरना उसे पीड़ा हो सकती है।

जो व्यक्ति जिस स्तर का है, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। समय का भी हम अवमूल्यन न करें। समय भी कीमती चीज है। समय एक प्रकार का धन है। हमें जो मनुष्य जन्म मिला है, मनुष्य जन्म का कालमान मिला है, उसका हम अच्छा उपयोग करें। मनुष्य में ज्ञान होता है, वह चिंतनशील प्राणी है।

गार्हस्थ्य में भी समय का कुछ उपयोग धार्मिक क्रिया में कर सकते हैं। एक सामायिक सुबह-सुबह हो जाए। दिनभर की आध्यात्मिक खुराक मिल सकती है। जितना समय मिल सके अच्छा उपयोग करें। समय को फालतू न गँवाएँ। जो-जो रात बीतती है, वह लौटकर वापस नहीं आती, उसका धर्म में उपयोग करें तो वो रात्रियाँ सफल हो जाती हैं। ज्ञानी व्यक्ति समय का मूल्य जानता है। समय का अच्छा उपयोग कर उसे सार्थक बनाएँ।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

संघ एक साधन और मूल साध्य है...

(पृष्ठ १६ का शेष)

करुणा के महासागर आचार्यप्रवर ने अपने श्रीमुख से अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि आज हम धर्मशासन के संदर्भ में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के १५९वें मर्यादा महोत्सव का मुख्य समारोह आयोजित कर रहे हैं। हमारा धर्म शासन जैन शासन का ही एक अंग है। २६२ वर्ष पूर्व हमारे धर्मसंघ का शुभारंभ हुआ था।

हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य परम पूजनीय आचार्य भिक्षु हुए। वे हमारे परमपिता जनक हैं। उन्होंने मानो धर्म क्रांति की थी। जहाँ क्रांति होती है वहाँ विरोध भी हो सकता है। पर आचार्य भिक्षु में प्रबल मनोबल था और वे आगे बढ़ते रहे। मैं उनके चारित्र बल को नमन करता हूँ।

आचार्य भिक्षु द्वारा आज के दिन ही मर्यादा पत्र निर्मित किया गया जो हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। पूज्यप्रवर ने इस मर्यादा पत्र के दर्शन करवाए। यह पत्र हमारे लिए गण-छत्र है। आचार्य भिक्षु की उत्तराधिकार परंपरा चली। उनमें डालगणी विलक्षण आचार्य हुए। आचार्य तुलसी ने तो महाप्रज्ञ जी को अपना उत्तराधिकार सौंपते हुए स्वयं के करकमलों से आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया था।

हमारे धर्मसंघ में वैचारिक एकता है। हमारे धर्मसंघ का सिद्धांत एक है। आचारिक एकता एक है। हमारे धर्मसंघ में आचार्य भी एक ही होता है। संविधान-मर्यादाओं की एकता है। यह एकता का चतुष्ट्य है जो अपने आपमें विलक्षण है। ये एकता का प्रारूप दो सौ से अधिक वर्षों से प्रवर्धमान है, उसे आगे बढ़ाने में हमारा सतत् योगदान रहे।

हमारे धर्मसंघ में सर्वोपरी स्थान आचार्य का है। आचार्य को हमारे यहाँ एक श्रद्धा के केंद्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। आचार्य और शासन में शासन बड़ा है। आचार्यश्री शासन के सदस्य होते हैं। इसलिए संघ सर्वोपरी है। आचार्य को अधिकार प्राप्त है। साधु-साध्वियों को आचार्य की आज्ञा लाँघने का त्याग है। हमारे संघ में व्यवस्था-तंत्र भी सुंदर है। इस शासन में अहंकार और ममकार का भी सबको त्याग है।

हमारे धर्मसंघ में लगभग ७०० चारित्रात्माएँ हैं। समण श्रेणी व श्रावक-श्राविकाएँ हैं, सबका एक लक्ष्य आत्मकल्याण का है। संघ एक साधन है, साध्य आत्मकल्याण है। आत्मकल्याण-यथार्थ बड़ा है, संघ सहायक बनता है। हमने धर्मसंघ को धर्म सहायक के रूप में स्वीकार कर रखा है। हम संघ और संघपति के प्रति समर्पित रहें। संघ की सेवा करते रहें। आचार्य की आज्ञा के प्रति भी सम्मान और समर्पण का भाव रहे।

हम महाव्रतों-रूपी हीरों की सुरक्षा करते रहें, ये अनमोल हीरे हैं। सबसे लुटेरा मोहनीय कर्म है, इस लुटेरे से सावधान रहें। मर्यादा निष्ठा रहे। धर्मसंघ का मूल अध्यात्म है। हम अध्यात्म के प्राण तत्त्व को सत्राण बनाते रहें तो धर्मसंघ साधना में सहयोगी है। हम पवित्र भावों से धर्मसंघ में साधना करते रहें।

ज्ञानशाला समाज का संस्कार देने वाला उपक्रम है। उपासक श्रेणी भी हमारी अच्छी गतिविधि है। अच्छी श्रेणी समाज की बन गई है, इसका भी विकास होता रहे। मुमुक्षु गतिविधि भी बहुत बढ़िया है। इनकी भी संख्या वृद्धि हो एवं अच्छा प्रशिक्षण चलता रहे। श्रावकों का श्रावकत्व भी पुष्ट रहे। शनिवार की सामायिक, सुमंगल साधना से श्रावकत्व को निखारा जा सकता है।

हमारे धर्मसंघ में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसी लोक-कल्याणकारी गतिविधियाँ भी चल रही हैं। साहित्य भी कितना सृजित हो रहा है। कल्याण परिषद् भी समाज की दृष्टि से सर्वोपरी निर्णायक मंच है। विकास परिषद् भी है। साधु-साध्वी संघ में बहुश्रुत परिषद् भी है। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का भी स्मरण किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी वर्तमान में सेवाएँ दे रही हैं। साध्वीवर्या व मुख्य मुनि भी व्यवस्था तंत्र से जुड़े हुए हैं। अच्छा विकास होता रहे। सेवा देते रहें।

समणियाँ भी विभिन्न रूप में सेवा दे रही हैं। गृहत्यागी संन्यासी है। हमारे साधु-साध्वियों में अच्छी साधना चलती रहे। प्रमाद से वंचित रहें। हमें अपने संयम का ध्यान रखना चाहिए। सबके साता रहें। आचार्यप्रवर ने मर्यादाओं के संबंध में फरमाया कि चारित्रात्माओं को संयम करने, प्रमाद से बचने और साधन के उपयोग में जागरूकता और प्रयोग की एक वार्षिक रिपोर्ट बनाकर गुरुकुल में भेजने की प्रेरणा भी प्रदान की।

आचार्यश्री ने बैनर-पोस्टर में आचार्य के साथ अन्य चारित्रात्माओं के फोटो न लगाने, जुलूस में किसी भी प्रकार के बैंड-बाजे का प्रयोग न करने की प्रेरणा भी श्रावक समाज को प्रदान की।

मुंबई में चातुर्मासिक प्रवेश के बाद आषाढ़ शुक्ला-११, २६ जून को दीक्षा समारोह करने का भाव है। समणी दीक्षा भी देने का भी भाव है। चार मुमुक्षु बहनों को समणी दीक्षा देने की घोषणा करवाई। समणी विनीतप्रज्ञा जी, समणी जगतप्रज्ञा जी का श्रेणी आरोहण करने का फरमाया। मुमुक्षु विपुल को भी मुनि दीक्षा देने का भाव है। मुंबई चातुर्मासिक प्रवेश २८ जून को प्रातः ६ बजकर ६ मिनट पर हो सकेगा। २८ नवंबर को चातुर्मास संपन्न कर वहाँ से विहार करना है।

पूज्यप्रवर ने मर्यादा पत्र का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने मर्यादा महोत्सव पर स्वरचित गीत का सुमधुर संगान करवाया। साधु-साध्वियों ने लेख पत्र का वाचन किया। इस मर्यादा महोत्सव में ४६ संत, ८५ साध्वियों एवं ४१ समणियों की उपस्थिति है। श्रावकों को श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया।

पूज्यप्रवर ने आगामी वर्ष के चारित्रात्माओं के चातुर्मासों की घोषणा करवाई। समणियों के भी केंद्र फरमाए। पूज्यप्रवर ने पट्ट से उतरकर संघगान के साथ त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम की संपन्नता की घोषणा की।

मर्यादाएँ हमारे लिए रक्षा कवच - साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक यशस्वी धर्मसंघ है। इसके आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु का व्यक्तित्व और कर्तृत्व विलक्षण था। कुछ विरले महापुरुष ऐसे होते हैं, जो नए पथ का निर्माण करते हैं। आचार्य भिक्षु द्वारा लिखत मर्यादा का पत्र हमारे लिए छत्र बन गया। मर्यादाएँ हमारी धरोहर बन गई हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ समुद्र के समान मर्यादा में रहता है। साधुत्व तेरह नियम के रूप में तेरह करोड़ की संपत्ति है। जीवन को व्यवस्थित करने के लिए मर्यादाओं का निर्माण किया गया। मर्यादाएँ दो प्रकार की होती हैं—शास्त्रीय मर्यादाएँ एवं संघीय मर्यादाएँ। मर्यादाएँ हमारे लिए रक्षा कवच बन जाती हैं।

तेरापंथ की आचार्य परंपरा मर्यादा के प्रति जागरूक रही है। हमारा धर्मसंघ प्रबुद्ध साधु-साध्वियों का संघ है। आचार्य साधु-साध्वियों की सारणा-वारणा करते हैं। करणीय कार्यों की प्रेरणा देते रहते हैं। प्रेरणा के साथ प्रोत्साहन भी प्रदान करवाते हैं। तो अकरणीय कार्यों का निषेध भी करते हैं। वर्तमान आचार्य पूर्वाचार्यों को बहुमान देते हैं, तभी आज हमारा संघ चिरंजीवी है। कार्यक्रम के प्रारंभ में साधुवृंद, साध्वीवृंद एवं समणीवृंद द्वारा सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

> ✦ *साधना के क्षेत्र में सरलता की बहुत महत्ता है। ऋजु व सत्य साधक व्यक्ति का आभावलय पवित्र होता है।*
>
> – **आचार्यश्री महाश्रमण**

समय का सदुपयोग कर उसे सार्थक...

(पृष्ठ २ का शेष)

मुनि रजनीश कुमार जी ने समझाया कि गुरुदेव हमारी प्यास को बुझाने पधारे हैं।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित कृतियाँ पूज्यप्रवर के करकमलों में अर्पित की गई। संघ समर्पिता शासनश्री साध्वी जयप्रभा जी की जीवनी लेखिका साध्वी शीतलयशा जी द्वारा 'स्प्रिच्युलिटी एंड साइंस' गुरुदेव को समर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि जैन विश्व भारती भी ज्ञान प्रसार में अच्छा कार्य करती रहे।

अणुविभा के ७५वें वर्ष के संदर्भ में लोगो का अनावरण पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। पूज्यप्रवर ने अणुविभा के अमृत महोत्सव पर आशीर्वचन फरमाया। टीपीएफ द्वारा उत्कर्ष पुस्तक का लोकार्पण पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। आचार्यश्री की अहमदाबाद यात्रा के प्रसंग में अहमदाबाद प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा लोगो का लोकार्पण पूज्यचरणों में किया गया। इस संदर्भ में अहमदाबाद प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष गौतम बाफना ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के नवनियुक्त अध्यक्ष हंसराज डागा ने अपनी अभिव्यक्ति देते हुए नई टीम के नामों की घोषणा की। आचार्यश्री ने उन्हें और उनकी टीम को पावन आशीर्वाद प्रदान किया। अभातेममं की अध्यक्षा नीलम सेठिया ने भारत सरकार द्वारा जी-२० में महिला मंडल के चयन की जानकारी दी।

कार्यक्रम में आज व्यवस्था हस्तांतरण के रूप में ध्वज हस्तांतरण का भी उपक्रम रहा। इस संदर्भ में बायतू मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति की ओर से मनोज चौपड़ा ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं ने अहमदाबाद व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं को ध्वज हस्तांतरित किया। इस दौरान अहमदाबादवासियों ने गीत का संगान भी किया। आचार्यश्री ने सभी को आशीष प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया। अहमदाबाद वालों ने ध्वज ग्रहण किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पावन स्मृति

सेठ हरगोपाल नन्हीदेवी जैन मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)

सी-2/19, द्वितीय तल, प्रशांत विहार, सेक्टर-14, रोहिणी, दिल्ली-85

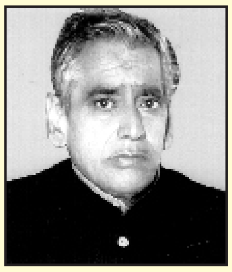

श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० हरगोपाल जैन
स्वर्गवास
12-02-1979

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व० नन्ही देवी जैन
स्वर्गवास
18-02-2007

हर व्यक्ति के जीवन में अच्छाइयाँ और कमियाँ दोनों होती हैं। यदि कमियों को दूर करने और अच्छाइयों को विकसित करने का प्रयास होता है तो जीवन अच्छा बन जाता है।

नत्थू राम जैन-कुसमलता जैन, नरेश-जयश्री जैन, विनोद-कविता जैन
पुनीत-गरिमा जैन, रितिक जैन, यशस्वी जैन

(उकलाना-हिसार-दिल्ली)

✦ शरीर से मनुष्य होना विशेष बात है। किंतु आचार से, व्यवहार से मनुष्य होना, मानव में मानवता का होना विशेष बात होती है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

सरकारी हॉस्पिटल में बैंचों का लोकार्पण

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेमम द्वारा निर्दिष्ट 'कन्या सुरक्षा योजना' के अंतर्गत तेमम, आर०आर० नगर द्वारा बंगारप्पा स्थित सरकारी हॉस्पिटल में बैंचों का उद्घाटन नवकार मंत्र एवं अर्हम की ध्वनि के साथ मंडल की संरक्षिका बहनें, संस्थापक अध्यक्ष, पूर्व अध्यक्ष, पदाधिकारी बहनों के कर-कमलों द्वारा किया गया।

अध्यक्षा लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। तीन-तीन सीटर की पाँच बेंच, एक सीटर की चार कुर्सियाँ एवं हॉस्पिटल के जरूरत के समान रखने हेतु एक अलमारी प्रदान की गई। हॉस्पिटल की मुख्य डॉक्टर पुष्पलता का सम्मान साहित्य एवं पट्टे के द्वारा किया गया।

डॉ० पुष्पलता ने कहा कि वह साढ़े तीन साल से इस अस्पताल में कार्यरत है, उसने पूर्व में ही तेमम सदा ही किसी न किसी रूप में हॉस्पिटल में जरूरत के सामान का अनुदान करती रही है। मंडल द्वारा पुस्तकों के रखने हेतु हमें एक आलमारी भी प्रदान की गई। बेंचों पर कन्या सुरक्षा स्लोगन की पट्टियाँ लगाई गई हैं।

कार्यक्रम में पधारे हुए स्थानीय सभा के मंत्री हेमराज सेठिया, तेयुप के अध्यक्ष कौशल लोढ़ा, महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष, निवर्तमान अध्यक्ष, उपाध्यक्ष ने मंडल के कार्यों की प्रशंसा की व शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। धन्यवाद पूनम दुगड़ ने दिया। उद्घाटन में अच्छी संख्या में बहनों की सहभागिता रही।

'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यक्रम का आयोजन

सरदारपुरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, सरदारपुरा द्वारा निर्माण कार्यशाला के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला के प्रथम चरण का आयोजन चिलका राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में किया गया। अध्यक्ष सरिता कांकरिया ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम का प्रारंभ किया।

अध्यक्षा द्वारा प्रिंसिपल, सभी अध्यापिकाओं एवं बच्चों का तथा कार्यक्रम में पधारे हुए महिला मंडल की बहनों का अभिनंदन किया गया। मंत्री चंद्रा जीरावला ने बच्चों को महाप्राण ध्वनि के प्रयोग करवाए एवं महाप्राण ध्वनि के लाभ के बारे में बताया।

बच्चों को 'मीठी वाणी' विषय के बारे में अभातेमम की एसोसिएट मेंबर मोनिका चोरड़िया ने कहानी के माध्यम से बताया। बच्चों के साथ प्रश्न-उत्तर का दौर भी चला। दिलखुश तातेड़ ने व्यक्तिगत स्वच्छता विषय पर अपने विचार रखे। प्रिंसिपल चंद्रा ने महिला मंडल को धन्यवाद दिया एवं कहा कि भविष्य में भी स्कूल को सहयोग मिलता रहे, ऐसी आशा है।

अंत में मंत्री चंद्रा जीरावला ने बच्चों को अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए एवं आभार ज्ञापन तथा संचालन किया। कार्यशाला में २०० बच्चे एवं १० अध्यापिकाओं की उपस्थिति रही। इस अवसर पर महिला मंडल व कन्या मंडल, सरदारपुर के सदस्यों की उपस्थिति रही।

'दया' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर

राजराजेश्वरी नगर अभातेमम द्वारा निर्देशित योजना निर्माण के अंतर्गत उम्मीद एक बेहतर कल के तहत 'दया' विषय पर तेमम, आर०आर० नगर, बैंगलोर के द्वारा बीबीएमपी गवर्नमेंट स्कूल में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। अध्यक्ष लता बाफना तथा मंत्री सीमा छाजेड़ की उपस्थिति में निशा छाजेड़ ने महाप्राण ध्वनि करवाई तबा उनसे होने वाले लाभ के बारे में बताया।

संगीता डागा ने स्थानीय भाषा में एक कहानी सुनाई, जिसका विषय दया भाव था तथा उन्होंने मांसाहार का सेवन न करने का तथा कोई भी वस्तु जिसमें किसी भी प्राणी की हिंसा की गई हो उसका उपयोग वर्जित करने की सलाह दी।

बच्चों में दया भाव जागृत करने के उद्देश्य से संगीता कुंडलिया, ममता बोथरा तथा प्रमिला जैन ने मनोरंजक गेम खिलाया तथा सभी के प्रति दया रखने के महत्त्व को प्रायोगिक रूप से बच्चों को समझाया। इस कार्यक्रम के दौरान लगभग ४० बच्चों की उपस्थिति थी।

बच्चों में सद्संस्कार निर्माण परियोजना

भीलवाड़ा।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, भीलवाड़ा द्वारा 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का प्रथम चरण मकर संक्रांति के अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शास्त्री नगर एवं सेठ मुरलीधर मानसिंह का गर्ल्स स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यशाला में ५ से ८वीं कक्षा तक के विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। निर्माण प्रोजेक्ट संयोजिका विमला रांका ने बच्चों को ताड़ासन करवाया। आशा भंडारी ने आसन के लाभ बताए। स्वीटि नैनावटी ने महाप्राण ध्वनि एवं मोनिका जैन ने अनुलोम-विलोम करवाया। अलका बोहरा ने 'ईमानदारी' विषय पर कहानी सुनाई। अनिता सिंधवी ने अपने विचार व्यक्त किए। उषा सिसोदिया ने बच्चों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जीवन चरित्र बताया एवं दिव्या बोरदिया ने स्वामी विवेकानंद के प्रेरक प्रसंग बताए।

सीमा हिरण ने ज्ञान मुद्रा करवाई एवं अनिता भंडारी ने बच्चों में अभय का विकास हो इसके लिए अभय की अनुप्रेक्षा करवाई। निर्माण प्रोजेक्ट संयोजिका स्नेहलता पितलिया ने बच्चों को संकल्प दिलाया कि वह किसी शुभ अवसर पर एक पौधा जरूर लगाएँ। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि बच्चों को करवाए गए विभिन्न प्रयोगों पर प्रश्न पूछकर अध्यक्षा मीना बाबेल द्वारा पुरस्कार वितरण किए गए। दोनों ही स्कूल के प्रिंसिपल और सभी टीचर्स ने महिला मंडल के इस कार्य की सराहना करते हुए आभार व्यक्त किया।

कालू तत्त्व शतक प्रतियोगिता का आयोजन

बालोतरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी व साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में कालू तत्त्व शतक वर्ग प्रथम व द्वितीय पर आधारित बोर्ड गेम पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। इसके पश्चात प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि तेमम बालोतरा की बहनों ने तत्त्वज्ञान के प्रति अच्छा रुझान है और यह रुझान भी आगे विकसित होता रहे। अभातेमम की इस बोर्ड गेम प्रतियोगिता की सराहना की।

इस अवसर पर उपस्थित अभातेमम सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा की रही। प्रतियोगिता की संयोजिका महाश्रमण तत्त्व ज्ञान सेंटर के अध्यक्ष कविता सालेचा व महिला मंडल सदस्य तत्त्वज्ञ श्राविका सरिता बालड़ ने अच्छे तरीके से इस गेम को खिलाया।

प्रतियोगिता में ६ ग्रुप बनाए गए। तीन-तीन बहनों का एक ग्रुप बनाया गया। कुल १८ बहनों ने भाग लिया। जिसमें एक कन्या मंडल की बहन मुस्कान वेद मेहता ने भी भाग लिया। प्रथम ग्रुप के विजेता सुमन देवी कुवाड़, विमला देवी संकलेचा तथा मुस्कान वेद मेहता रही। सभी श्रोतागण को भी तत्त्वज्ञान से संबंधित प्रश्न पूछे गए एवं सभी को सम्मानित किया गया।

प्रतियोगिता के संचालन में कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर परामर्शक लूणी देवी गोलेच्छा, पीपी देवी ओस्तवाल, पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल तथा पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग १०० बहनें उपस्थित थी। आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण

बालोतरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, बालोतरा के तत्त्वावधान में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि ध्वजारोहण नगर सभापति सुमित्रा वेद मेहता, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, ओसवाल समाज के अध्यक्ष शांतिलाल डागा, महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा द्वारा किया गया।

राष्ट्रगान का संगान किया गया और ध्वज को सलामी दी गई। महिला मंडल अध्यक्षा ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा मंत्री महेंद्र वैद, अभातेयुप सदस्य मनोज ओस्तवाल, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, अभातेमम सदस्य मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा सहित अनेक पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कालू तत्त्व शतक तथा कर्म विज्ञान पर आध्यात्मिक प्रतियोगिता

डी०वी० कॉलोनी।

अभातेमम द्वारा निर्देशित कालू तत्त्व शतक (प्रथम व द्वितीय वर्ग) एवं कर्म-विज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक बोर्ड गेम प्रतियोगिता का आयोजन डी०वी० कॉलोनी स्थित, तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण का संगान प्रेरणा गीत के द्वारा किया गया। अध्यक्षा अनीता गिडिया द्वारा सभी पधारी मंडल पदाधिकारी, प्रतिभागी एवं सदस्य बहनों का स्वागत किया गया। बोर्ड गेम के नियमों की जानकारी रीता सुराणा ने सभी प्रतिभागियों को दी। दोनों बोर्ड गेम व्यवस्थित संयोजिका द्वारा खिलाए गए। सभी प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

लगभग ३५ प्रतिभागी एवं अन्य सदस्य बहनों की उपस्थिति रही। प्रतियोगिता का संचालन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया। कार्यशाला की संयोजिका पूर्व अध्यक्ष रीता सुराणा, निशा दुगड़ एवं सीमा नाहर रही।

दोनों बोर्ड गेम प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रेखा संकलेचा, द्वितीय स्थान शांता बैद व तृतीय स्थान अंजू रूणवाल ने प्राप्त किया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष शकुंतला बुच्चा, कोषाध्यक्ष शांता बैद, समिति सदस्य हर्षलता दुधेड़िया, निशा दुगड़, सीमा नाहर, सोबाग बांठिया, प्रेम सुराणा, सरिता खटेड़, विनय सुराणा, सलोनी लुणावत आदि उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया।

'होम हेल्पर डे' कार्यक्रम का आयोजन

सरदारपुरा-जोधपुर।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम द्वारा होम हेल्पर डे मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण से हुई। अध्यक्ष सरिता कांकरिया के द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। निवर्तमान अध्यक्षा विमला बैद ने अपनी आय से छोटी-छोटी बचत कर अपने भविष्य को सुरक्षित रखने के बारे में समझाया।

मुख्य अतिथि डॉ० मिली इनानिया ने हेल्पर बहनों को उनके स्वास्थ्य के लिए जागरूक रहने तथा समय पर चिकित्सा सुविधा का लाभ उठाने की प्रेरणा दी। सरकार के द्वारा प्राप्त निःशुल्क चिकित्सा सेवाओं के बारे में जानकारी दी।

डॉ० नमिता भंडारी ने अच्छा स्वास्थ्यवर्धक खाना अपनी डाइट में शामिल करने के लिए कहा।

साध्वी युक्तिप्रभा जी ने कहा कि जीवन हमारा कर्मवाद के सिद्धांत पर आधारित है। मनुष्य को अपने कर्म के कारण ही सब कुछ मिलता है। सबको खुश रहने के लिए कहा।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी ने बहनों को एक कहानी के माध्यम से जीवन में खुश कैसे रहें, प्रसन्न रहने के उपाय बताए।

हमारी घरेलू सहायक बहनों ने नशामुक्त रहने का संकल्प किया। अंत में कुछ हेल्पर्स बहनों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। लगभग १०० बहनों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन मोनिका चोरड़िया द्वारा किया गया।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

दिल्ली।

महासभा के अंतर्गत ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रकोष्ठ अहमदाबाद के निर्देशन में ज्ञानशाला का उपक्रम दिल्ली में १२ स्थानों पर सुचारु रूप से संचालित है। दिल्ली ज्ञानशाला ने अपना २१वाँ वार्षिकोत्सव समारोह अणुव्रत भवन के प्रांगण में दो सत्रों में आयोजित किया। जिसमें शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी, शासनश्री साध्वी ललितप्रभाजी, शासनश्री साध्वी शीलप्रभाजी तथा सहवर्तिनी साध्वीवृंद का सान्निध्य प्राप्त हुआ। शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी ने कहा कि अगर बच्चों की नींव गहरी बनती है तो भविष्य सुंदर होगा। बच्चे और युवक देश का भविष्य होते हैं। वे जागते हैं तो देश जागता है। वे क्रियाशील होते हैं तो देश में विशिष्ट विकास होता है। हम वर्तमान पर ध्यान दें और भविष्य को और अधिक उज्ज्वल बनाने का प्रयास करें।

साध्वीश्री जी ने आगे दिल्ली तेरापंथी सभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला उपक्रम के संयोजक अशोक बैद और सभी प्रशिक्षक कार्यकर्ताओं के श्रम को उल्लेखित करते हुए सभी को अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग करने की प्रेरणा दी और बच्चों को एक कहानी के माध्यम से संस्कारों की महत्ता बताई।

इस अवसर पर विशिष्ट गणमान्य अतिथियों, श्रावक समाज और ज्ञानशाला परिवार के साथ लगभग ५१० व्यक्तियों की उपस्थिति रही। ज्ञानार्थी बच्चों ने प्रस्तुतियों के द्वारा उपस्थित परिषद् को भावविभोर कर दिया। सर्वप्रथम साध्वीवृंद ने नवकार के समुच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात तुलसी अष्टकम् के संगान के साथ ज्ञानार्थियों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। बाल ज्ञानार्थियों द्वारा ज्ञानशाला गीत का संगान किया गया। ज्ञानशाला संयोजक अशोक बैद ने आए हुए अतिथियों एवं परिषद् का स्वागत किया। साध्वीवृंद को ज्ञानशाला वार्षिक प्रतिवेदन की प्रति भेंट की।

सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, पूर्वाध्यक्ष जोधराज बैद, डालमचंद बैद, समाज भूषण विशिष्ट श्रावक मांगीलाल सेठिया, दिल्ली एनसीआर यूपी के आंचलिक संयोजक विनोद भंसाली, सह-आंचलिक संयोजक महिमचंद बोथरा, अणुव्रत न्यास के प्रभारी शांति जैन, अणुविभा चीफ ट्रस्टी तेजकरण सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु जैन, मंत्री यशा बोथरा, पूर्वाध्यक्षा निर्मला कोठारी, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, दिल्ली ज्ञानशाला परामर्शक रतनलाल जैन, मनफूल बोथरा, सरिता चोपड़ा, क्षेत्रीय सभाओं के अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्य आदि पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही।

द्वितीय सत्र—समापन सत्र के रूप में आयोजित हुआ। जिसमें सभी केंद्रों के दो श्रेष्ठ ज्ञानार्थियों, शत-प्रतिशत उपस्थिति वाले, ज्ञानशाला स्थान प्रदाताओं तथा सभी केंद्रों के व्यवस्थापकों, सह-व्यवस्थापकों, मुख्य-सहमुख्य प्रशिक्षिकाओं तथा सभी प्रशिक्षिकाओं एवं कार्यकर्ताओं द्वारा किए उनके निस्वार्थ सेवा और श्रम को मोमेंटो/सार्टिफिकेट प्रदान कर दिल्ली सभा द्वारा सम्मानित किया गया।

इस सत्र का मंगलाचरण संयोजकीय टीम से अशोक बैद, बजरंग कुंडलिया, नवीन जैन, पारस तातेड़, हेमा चोरड़िया, दीपिका नाहटा, राजुल मनोत ने किया। प्रथम सत्र का संचालन शास्त्री नगर केंद्र के ज्ञानार्थी महक सेठिया व गीतिका जैन द्वारा किया गया तथा द्वितीय सत्र का संचालन सह-संयोजिकाओं द्वारा किया गया। कार्यक्रम में छापर गुरुदर्शन यात्रा के प्रायोजक कन्हैयालाल, हेमंत जैन पटावरी परिवार एवं स्वास्थ्यवर्धन हेतु विशेष प्रायोजक रहे अरुण जैन को सभी ने मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया। ज्ञानशाला केंद्र गांधीनगर, सूर्यनगर, ओसवाल भवन, रोहिणी एवं संपूर्ण ज्ञानशाला परिवार के सहयोग से कार्यक्रम व्यवस्थित और सफल रहा।

शिशु संस्कार बोध परीक्षा

राजलदेसर।

केंद्रीय ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के निर्देशन से पूरे भारत में ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन हुआ, जिसमें राजलदेसर ज्ञानशाला द्वारा ज्ञानार्थी परीक्षा 'शिशु संस्कार बोध परीक्षा' का आयोजन किया गया। परीक्षा तेरापंथ भवन में आयोजित हुई।

शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी ने सभी ज्ञानार्थियों को आशीर्वचन प्रदान किए एवं मंगलपाठ सुनाया। तेमम अध्यक्षा प्रेमदेवी विनायकिया एवं अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा सुचारु रूप से संचालित हुई।

महिला मंडल अध्यक्षा प्रेमदेवी विनायकिया ने नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ परीक्षा के पैकेट खोले एवं सभी ज्ञानार्थियों को शुभकामनाएँ दी। परीक्षा में शिशु संस्कार बोध भाग-१ में ४, भाग-२ में ४, भाग-३ में ३ तथा भाग-४ में २ तथा भाग-५ में ४ ज्ञानार्थियों सहित कुल १७ ज्ञानार्थियों ने दृढ़ मनोबल के साथ भाग लिया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका हेमलता घोषल, निर्मला जैन, मोनिका बैद एवं ज्योति बरड़िया ने पूरी जागरूकता व निष्पक्षता के साथ व्यवस्थित रूप से परीक्षा ली।

योगक्षेम
अभातेयुप योगक्षेम योजना

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

सरदारपुरा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, सरदारपुरा एवं पाली ने सामूहिक रूप से अशोक कोठारी के गृह प्रवेश कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न किया गया।

नितिन कोठारी-मनीषा कोठारी का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक भूपेश तातेड़, जितेंद्र गोगड़, बसंत जैन, ऋषभ श्यामसुखा ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा मंत्रोच्चार के साथ गृह प्रवेश कार्यक्रम संपन्न करवाया।

अशोक कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए दोनों परिषदों के संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

पर्वत पाटिया।

रावलियां कलां निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी अभिषेक बंब के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक रवि मालू एवं पवन बुच्चा ने भगवान पार्श्वदेव की प्रस्तुति व नमस्कार महामंत्र के मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में परिवार जनों के साथ तेयुप अध्यक्ष के साथ उनकी पूरी पदाधिकारीगण टीम एवं समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

अभिषेक बंब ने पधारे हुए संस्कारक एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया। परिषद की तरफ से मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

पाली।

कंवरलाल पीयूष कुमार चोपड़ा के यहाँ गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक बसंत सोनी मंडिया ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया। चोपड़ा परिवार द्वारा संस्कारकों एवं पधारे हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया।

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

भीनासर निवासी रजनीश-प्रियंका कोचर के नवजात पुत्री रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक देवेंद्र डागा और विपिन बोथरा ने विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

इस अवसर पर पारिवारिक जनों की उपस्थिति रही।

हैदराबाद।

मयूर बोरड़ एवं संगीता बोरड़ के पुत्र का नामकरण संस्कार कार्यक्रम जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक प्रमोद भंडारी, ललित लूनिया ने जैन मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित किया।

संस्कारकों ने पारिवारिक जनों को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

भीलवाड़ा।

भीलवाड़ा निवासी आदित्य, रेयांस सुराणा के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अशोक सिंधवी एवं सह-संस्कारक गौतम दुगड़ ने संपूर्ण विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार सहित संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, मंत्री राजू कर्नावट, कोषाध्यक्ष सुरेश चोरड़िया सहित समाजजन, परिवारजन उपस्थित थे।

भूमि पूजन

बोईसर (मुंबई)।

आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन कालबादेवी, मुंबई द्वारा बोईसर के काम्बलगाँव (बेटेगाँव) में नवीन कॉलेज भवन का भूमि पूजन जैन संस्कार विधि से संस्कारक सौरभ दुधोड़िया, राजेश चौधरी, मुकेश मादरेचा, किरण परमार, विनोद चत्रावत ने संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में पदाधिकारीगण, सदस्य एवं अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन फाउंडेशन के महामंत्री लक्ष्मीलाल डागलिया ने किया।

✦ *कर्म के साथ अकर्म को जोड़ो। प्रवृत्ति के साथ निवृत्ति को जोड़ो। भोग के साथ योग को जोड़ो। फिर देखो तुम्हें कितना आनंद मिलता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा महोत्सव के विविध आयोजन

लुधियाना

आज्ञानुवर्ती उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य तुलसी कल्याण केंद्र भवन में १५९वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ गीत के संगान से हुआ।

इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु कुशल शिल्पी थे और उनकी साधना बेजोड़ थी। उनके द्वारा निर्मित मर्यादा आज भी संघ के लिए प्राण, त्राण और लक्ष्मण रेखा बनी हुई है। मुनिश्री ने आगे कहा कि मर्यादा महोत्सव के सूत्रधार चतुर्थ आचार्य जयाचार्य थे। श्रीमद्जयाचार्य ने तीन कार्यक्रम भिक्षु चरमोत्सव, पट्टोत्सव, मर्यादा महोत्सव धर्मसंघ को प्रदान किए। मुनिश्री ने स्वरचित गीत का संगान किया।

मुनि अमन कुमार जी ने गीत की पंक्तियों का उच्चारण करते हुए मर्यादा विषय पर वक्तव्य दिया। मुनि नमि कुमार जी ने तेरापंथ धर्मसंघ का मिलना सौभाग्य बताया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष अभयराज सिंधी, तेममं मंत्री श्रद्धा दुगड़, स्नेह बरमेचा, जयश्री सेठिया, तेयुप अध्यक्ष तरुण सुराणा, अणुव्रत समिति संगठन मंत्री जयंत सेठिया, उपासिका विनोद देवी सुराणा, साधना सामसुखा, प्रिया सामसुखा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का समापन संघ गान के संगान के साथ किया गया।

भटिंडा

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में पंजाब की धरती भटिंडा में १५९वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया। इष्ट-स्तुति के साथ साध्वीश्री जी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ प्राणवान धर्मसंघ है। श्रद्धा, समर्पण, व्यवस्था इसकी प्राणवत्ता है। आज मर्यादा महोत्सव मना रहे हैं, यह महोत्सव संघ की एकता को बढ़ाने वाला उत्सव है। तप-त्याग की बलिवेदी पर इस मर्यादा का जन्म हुआ। संघ के विकास का महत्त्वपूर्ण आधार है–मर्यादा।

आगे आपने कहा कि आचार्य भिक्षु ने केवल मर्यादा बनाई ही नहीं अपितु मर्यादामय जीवन जीया। मर्यादा के बिना कोई भी संगठन शक्तिशाली नहीं बन सकता। जयाचार्य ने इसे उत्सव का रूप देकर चिरजीवी बना दिया। अक्षुण्ण बना दिया।

इस अवसर पर मंचासीन अतिथि भटिंडा पूर्व विधायक जिलाध्यक्ष भाजपा स्वरूपचंद सिंहला, भटिंडा मेअर रमण गोयल, गोविंदगढ़ से चेयरमैन सुरेंद्र मित्तल, सुनाम से पंजाब प्रांतीय तेरापंथ सभाध्यक्ष केवलकृष्ण गोयल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथी सभा भटिंडा ने साहित्य, फोटो फ्रेम व फिता लगाकर मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया। तेरापंथी महासभा कार्यकारिणी सदस्य राजीव जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

नए अंदाज के साथ कन्या मंडल, युवती बहनें सिंपोजियम की प्रस्तुति के साथ सरगम स्वरलहरी प्रवचन हॉल में गुंजने लगी। नन्हे-नन्हे कलाकारों ने ऐतिहासिक घटनाओं के साथ मर्यादा के महत्त्व को उजागर किया। महिला मंडल ने मधुर गीत सुनाया।

संचालन के साथ साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत का संगान किया। मंत्री डॉ० योगेश जैन ने स्वागत भाषण के साथ समस्त परिषद का स्वागत किया। उपासिका कमलेश, महिला मंडल अध्यक्षा स्नेहा बांठिया, हिमांक, गणेश ने अपने विचार रखे। संघगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सुनाम, गोविंदगढ़, डबवाली, संगतमंडी, जेतोमंडी, तपामंडी, गुणियानामंडी आदि क्षेत्रों से श्रद्धालुओं की सराहनीय उपस्थिति रही।

विजयवाड़ा

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में १५९वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। मुनि दीप कुमार जी एवं प्रबुद्ध साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की सन्निधि में आयोजित प्रथम बार चार तीर्थ की उपस्थिति से संपूर्ण वातावरण सुरम्य बन गया।

इस अवसर पर मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि मर्यादा का महोत्सव मात्र तेरापंथ धर्मसंघ में मनाया जाता है जो अनुपम, अद्भुत और आकर्षण का केंद्र है। साध्वीश्री एवं मुनिश्री की परस्पर प्रमोद भावना ने उपस्थित सभा को भावविभोर कर दिया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि संघबद्ध साधना को महत्त्व दिया जाता है। तीर्थंकर भी संघ की वंदना करते हैं। आचार्य भिक्षु की तपस्या से उद्भुत यह तेरापंथ संघ प्राप्त करके हम गौरव महसूस करते हैं। एक गुरु आज्ञा, अनुशासन और मर्यादा संघ के प्रत्येक सदस्य के लिए जीवन प्राण है। यह विशेष दिन जयाचार्य ने प्रदान किया है। यह पर्व हर मन में शक्ति का संप्रेषण करता है। आचार्य भिक्षु और उनकी आचार्य परंपरा ने समस्याओं का समाधान दिया है।

गुंटूर महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा, विजयवाड़ा के अध्यक्ष अशोक बागरेचा ने संपूर्ण सभा का स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष संदीप कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा लता बैद, अणुव्रत समिति अणुविभा केंद्रीय प्रभारी विमल बैद, तेरापंथ सभा, चेन्नई के अध्यक्ष उगमराज सांड, विहार सेवा प्रभारी गणपतराज डागा, चेन्नई तेरापंथ सभा के मंत्री अशोक खतंग सहित अनेक क्षेत्रों से सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथ परिवार, विजयवाड़ा की सभी संस्थाओं की तरफ से प्रस्तुति एवं तेमम, तेयुप की भव्य मर्यादा संगीत प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला द्वारा मर्यादा, अनुशासन और गुरु आज्ञा को दर्शाने वाली लघु नाटिका प्रस्तुत की गई।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु दूरदर्शी थे। उनके द्वारा प्रदत्त संविधान हमारा परम आधार है।

साध्वी सिद्धियशा जी ने कहा कि तेरापंथ के आचार्य कहते हैं मेरे प्रति समर्पित रहो, मैं जीवन भर के लिए निश्चिंत बना दूँगा। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा के मंत्री मनोज पुगलिया ने किया।

हासन

तेरापंथ भवन में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में १५९वाँ मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। इस आयोजन में मद्रास के माधावरम, मलनाड क्षेत्र, मंगलौर, शिमोगा, चिकमंगलोर, मुडीगेर, होलेनर्शीपुर, चन्नार्यपटना, सकलेशपुर, टिपटुर एवं हासन से सभी संस्कार धनी समाज सम्मिलित हुआ। स्वागत हासन सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र तातेड़ ने किया। वक्तव्य हासन महिला मंडल के अध्यक्ष संगीता कोठारी, हासन सभा के मंत्री सुरेश कोठारी, तेयुप के अध्यक्ष गौरव गुलगुलिया, टीपीएफ के अध्यक्ष भरत भंसाली, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चांदमल सुराणा ने अपने भाव रखे।

महिला मंडल ने गीतिका एवं छोटा-सा नाटक प्रस्तुत किया। तेरापंथ मद्रास माधावरम ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी गिसुलाल वोरा, मलनाड़ समिति के अध्यक्ष तेजकरण सिपानी, चिकमंगलूर अध्यक्ष ताराचंद सेठिया, शिमोगा अध्यक्ष चंदनमल भटेवरा ने अपने विचार व्यक्त किए। मद्रास अणुव्रत समिति सहमंत्री स्वरूपचंद दांती एवं होलेनर्शीपुर के अध्क्ष विमल पितलिया ने गीत की प्रस्तुति दी।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि मर्यादा आत्मानुशासन पर आयोजित होती है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ मिला, मर्यादाओं के शिखर पुरुष आचार्य भिक्षु ने अपनी साधना के साथ संघ की सुव्यवस्था एवं दीर्घजीविता के लिए मर्यादा का निर्माण किया, वह मर्यादा पत्र हमारे लिए छत्र है, शीतल छाया में रहकर आत्मा उत्थान का मार्ग है।

मुनि नरेश कुमार जी ने संचालन किया। हासन तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष महावीर भंसाली ने आभार व्यक्त किया।

भिवानी

शासनश्री साध्वी सरोज कुमारी जी के सान्निध्य में १५९वाँ मर्यादा महोत्सव मनाया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा सुनीता नाहटा ने मंगलाचरण को स्वर लहरी दी।

साध्वी प्रभावनाश्री जी ने मर्यादा महोत्सव पर अपनी भावना प्रस्तुत की। साध्वियों ने सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति अच्छी रही।

साध्वी नीतिप्रभाजी व साध्वी चिरागप्रभा जी ने निकट अतीत में मर्यादा अनुशासन की घटित घटनाओं को व्यवस्थित परिचर्चा के माध्यम से जनता में वाहवाही लूटी।

जैन विश्व भारती के परामर्शक सुरेंद्र जैन 'एडवोकेट' ने अपनी भावना प्रस्तुत करते हुए आचार्य भिक्षु के प्रति आभार व्यक्त किया। शासनश्री साध्वी सरोजकुमारी जी ने कहा कि ४ डी–(Destination, Discipline, Dedication and Dutifull) बनकर संघ की सेवा करते रहें। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिरागप्रभा जी ने किया।

कर्नाटक

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने मर्यादा महोत्सव के अवसर पर कहा कि आचार्य भिक्षु एक अध्यात्मवेत्ता विधिवेत्ता आचार्य थे। उन्होंने जो मर्यादाएँ लिखीं वे एक ऐसी मशाल हैं, जिसमें पूरा धर्मसंघ विश्व क्षितिज पर जगमगा रहा है। सबके लिए आकर्षण का केंद्र बना है। जो संघ, संगठन अपने निर्धारित सिद्धांत, मर्यादा व विचारधारा पर चलता है वही विकास एवं गति करता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ कन्याओं द्वारा मंगल स्तुति से हुआ। कार्यक्रम में महासभा के कार्यकारिणी सदस्य एवं क्षेत्रीय सभा प्रभारी रमेश चोपड़ा एवं केसरीचंद गोलछा की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम में साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी, साध्वी प्रबोधयशा जी, साध्वी धैर्यप्रभा जी, कोयंबटूर से उत्तमचंद पुगलिया, गदक से सुरेश कोठारी, जयसिंहपुर से मंजुबाई बरड़िया, इचलकरंजी से महेंद्र गिड़िया, माधवनगर से संजय संचेती, महेकर से डॉ० अभय कोठारी, राजेंद्र कोठारी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

स्थानीय महिला मंडल एवं सभा के सदस्यों ने गीत का संगान किया। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष जगदीश कोठारी ने दिया। ज्ञानार्थियों ने परिसंवाद के माध्यम से प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सन्मतिप्रभा जी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री महेंद्र जीरावला द्वारा किया गया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन में शासनश्री मुनि हर्षलाल जी के सान्निध्य में १५९वाँ मर्यादा महोत्सव तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ। नवकार महामंत्र उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। शासनश्री मुनि हर्षलाल जी ने मर्यादा और अनुशासन पर कहा कि मर्यादा जीवन का प्राण है। आचार्य भिक्षु ने संघ विकास के लिए अनेक नियम और संविधान बनाए और चतुर्थ आचार्य जीतमल जी ने उनको महोत्सव का रूप प्रदान किया। मर्यादा के सुरक्षा कवच में पूरा संघ विकास कर रहा है। मर्यादा पर गीतिका का संगान किया एवं कविता प्रस्तुत की।

मुनि यशवंत कुमार जी ने कहा कि मर्यादा जाग्रत एवं शक्ति संपन्न व्यक्ति के लिए होती है। जीवन को अच्छे साँचे में ढालने के लिए मर्यादा अनुशासन अपेक्षित है। संघ, समाज एवं व्यक्तित्व का विकास मर्यादा के आधार पर ही हो सकता है।

मुनि मोक्ष कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति मर्यादा को स्वयं पर, अपने घर में, अपने बच्चों पर लागू करें तभी इसका महत्त्व है। मुनिश्री ने गीतिका का संगान किया। मुनि प्रतीक कुमार जी ने मंच संयोजन किया। संयम पर्याय में तेरापंथ धर्म के वरिष्ठ संत शासनश्री मुनि हर्षलाल जी के ७८वें दीक्षा दिवस पर संत सुमदाय एवं श्रावक समाज ने मंगल शुभकामना व्यक्त की।

मर्यादा और अनुशासन पर्व पर सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, महिला मंडल मंत्री रेणु चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, टीपीएफ अध्यक्ष करण सिंह सिंघवी, अणुव्रत अध्यक्ष आनंद बाला टोडरवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि तेमम से संगीत प्रभारी विनीता भानावत एवं टीम ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। भिक्षु भजन मंडली से निर्मल सुतरिया, संजय भानावत और धर्मेंद्र छाजेड़ ने संघ भक्ति से ओतप्रोत गीतिका की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने किया।

✦ *जीवन को अच्छा बनाने के लिए व्यसनमुक्तता आवश्यक है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का सी-२० एवं जी-२० में चयन

गांधीनगर।

अभातेमम पिछले ५० वर्षों से आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाला एक सशक्त एनजीओ है। वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के आध्यात्मिक निर्देशन में अभातेमम प्रगतिशील है।

देशव्यापी ६०००० महिला सदस्यों व ४५० शाखा मंडलों वाले इस एनजीओ को तेरापंथ भवन, गांधीनगर में आयोजित एक विशेष समारोह में भारत सरकार द्वारा मनोनीत 'रामभाऊ प्रमोदिनी' द्वारा अधिकृत 'संपूर्णा' की संस्थापक अध्यक्ष शोभा विजेंद्र गुप्ता (दिल्ली से समागत) द्वारा भारत सरकार के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम सिविल - 20 इंडिया और G - 20 में चयनित होने की घोषणा करते हुए अभातेमम की प्रतिनिधि वीणा बैद को इसके प्रमाणिक प्रतीक चिह्न के रूप में ध्वज एवं लोगो प्रदान किया।

अभातेमम की परामर्शक लता जैन और पूर्व महामंत्री वीणा बैद ने इसे स्वीकार किया। शोभा विजेंद्र गुप्ता ने अपने वक्तव्य में कहा कि C 20 और G 20 में चयनित होना किसी भी संस्था के लिए अत्यंत गौरव भरी उपलब्धि है एवं इस C 20 द्वारा निर्धारित सामाजिक सरोकार के विभिन्न विषयों पर काम करने हेतु अभातेमम पूर्णतः सक्षम एवं समर्पित संस्था है।

भारत सरकार के अभियान में इस चयन से अभातेमम के कदमों में अधिक तीव्रता आएगी और उसे और अधिक शक्तिशाली बनाएगा। इस विश्वास के साथ उन्होंने संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया तथा राष्ट्रीय संयोजिका सुमन नाहटा (दिल्ली) को मंच से उत्साहपूर्ण बधाई प्रेषित की।

इस अवसर पर धारवाड़ से राजेंद्र पोद्दार एवं दिल्ली से समागत दीपक पर्वतियार ने प्रमुख वक्ता के रूप में अभातेमम को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए जल संरक्षण पर उपस्थित जनमेदिनी को अपने महत्त्वपूर्ण विचारों से अवगत कराया।

ज्ञातव्य है कि साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में आयोजित यह समारोह समाज-शाला 'जल है तो कल है' जैसे गंभीर सामाजिक विषय पर समायोजित थी। साध्वी गवेषणाश्री जी ने जल संरक्षण हेतु सैकड़ों बहन-भाइयों को संकल्पमय सौगात के साथ अभातेमम की विशाल महिला शक्ति को आशीर्वाद प्रदान किया।

समाज-शाला में साध्वीवृंद द्वारा स्वच्छ पर्यावरण हेतु 'प्रेरणा गीत' व महिला शक्ति द्वारा प्रस्तुत 'कर्तव्य' बोधपरक गीत जागृति का संदेश दे रहे थे। संस्कार निर्माण हेतु लघु नाटिका ने भी सभी का ध्यानाकर्षण किया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में तेमम, गांधीनगर, बैंगलुरु की अध्यक्ष स्वर्णमाला पोकरना एवं मंत्री सरस्वती बाफना व उनकी पूरी टीम का सराहनीय योगदान रहा।

आध्यात्मिक एवं रोचक प्रतियोगिता का आयोजन

भीलवाड़ा।

तेमम के तत्त्वावधान में अभातेमम द्वारा निर्मित कालू तत्त्व शतक पर आधारित बोर्ड गेम प्रतियोगिता का आयोजन शासनश्री मुनि हर्षकुमार जी, के सान्निध्य में जयाचार्य भवन भीलवाड़ा में किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ मुनिश्री के नवकार महामंत्र उच्चारण एवं मंडल की बहनों के प्रेरणा गीत से किया गया।

शासनश्री मुनि हर्षकुमार जी ने कहा कि अभातेमम का यह ज्ञान कंठस्थ का सुंदर उपक्रम जिसमें खेल-खेल में ज्ञान का विकास भी होता है। मुनि पारस कुमार जी ने कहा कि ऐसे खेल के माध्यम से तत्त्वज्ञान सीखना बहुत उपयोगी है। मुनि यशवंत कुमार जी ने मंडल द्वारा संचालित इस अनूठे कार्यक्रम की सराहना की।

मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि बोर्ड गेम इतना सरल एवं रोचक है कि हर एक बहन तत्त्वज्ञान की दिशा में आगे बढ़ सकती हैं। कार्यक्रम का संयोजन ज्योति दुगड़ एवं चंदा मेड़तवाल ने किया।

प्रतियोगिता में लगभग १४ बहनों ने भाग लिया। गोटी और पासे पर आधारित इस खेल को बहनों ने दो ग्रुप बनाकर खिलाया। दोनों ग्रुप को रेड और ब्लू कलर की पहचान से डिवाइड किया गया। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि यशवंत सुतरिया, संगीता चोरड़िया, सीमा बड़ोला, दीप्ति चोरड़िया, रीना बाबेल, सुमन भलावत प्रथम रहे। विजेता बहनों को पुरस्कृत किया गया एवं अन्य प्रतिभागी बहनों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यकारिणी टीम से मैना कांठेड़, सुमन दुगड़, विनीता सुतरिया सहित अन्य बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

उम्मीद एक बेहतर कल की प्रोजेक्ट का शुभारंभ

चेन्नई, पट्टालम।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, चेन्नई के तत्त्वावधान में निर्माण के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' प्रोजेक्ट का शुभारंभ पट्टालम जैन विद्यालय में किया गया। प्रोजेक्ट का प्रथम विषय ईमानदारी विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात प्रेरणा गीत महिला मंडल द्वारा हुआ। अभातेमम का इस प्रोजेक्ट को करने का उद्देश्य है इसकी जानकारी एवं ईमानदारी विषय पर इंग्लिश में स्टोरी एवं बच्चों को स्मृति विकास के लिए अनेक केंद्रों पर कलर थैरेपी का प्रशिक्षण संयोजिका सुभद्रा लुणावत ने दिया।

सुभाष चंद्र बोस के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में बच्चों को हिंदी में स्टोरी दीपाली ने बताई। स्वच्छ भारत अभियान पर कन्या मंडल अक्षि बोहरा, मेघा जैन एवं महिला मंडल से रक्षा आच्छा, संगीता आच्छा, शुभद्रा लुणावत ने लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। संकल्प आदि दीपाली सेठिया द्वारा करवाया गया।

निर्माण प्रोजेक्ट के प्रायोजक दिलीप कुमार नितिश कुमार गोलेच्छा की तरफ से बच्चों को पुरस्कार प्रदान करवाया गया।

इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष शांति दुधोड़िया, कन्या मंडल प्रभारी प्रीति डूंगरवाल, कार्यसमिति सदस्य कनक पुगलिया, सरोज चिप्पड़ भी उपस्थित थे।

चारित्रात्माओं का आध्यात्मिक मिलन

ब्यावर।

ब्यावर तहसील के अंतर्गत झालाचौकी स्थित भगवान महावीर भवन में स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्य विजयराजजी मूर्तिपूजक समाज से राष्ट्रसंत मुनि ललितप्रभ सागर जी एवं मुनि चैतन्य मिलन कुमार जी 'अमन' का त्रिवेणी संगम के रूप में मधुर मिलन हुआ। पारस्परिक सौहार्द भरे इस मिलन से श्रावक समाज में अच्छी प्रतिक्रिया हुई।

इस अवसर पर आचार्य विजयराज जी म०सा० एवं राष्ट्रसंत मुनि ललितप्रभ सागरजी से विविध विषयों पर वार्तालाप हुआ। आचार्य विजयराजजी ने पूज्यश्री महाश्रमण जी से मिलन की इच्छा जताई तथा अपने एक वर्ष पूर्व दीक्षित मुनि नमनप्रियजी एवं नीरज प्रियमुनि का परिचय करवाया। राष्ट्रसंत मुनि ललितप्रभ सागर जी ने मुनि शांतिप्रिय सागर जी का परिचय दिया।

मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की यात्रा संबंधी तथा मर्यादा महोत्सव बायतू में होने वाले कार्यक्रमों एवं आगामी चातुर्मासों के बारे में अवगति दी। इस अवसर पर स्थानकवासी, मूर्तिपूजक समाज तथा तेरापंथी सभा से अनेक श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

धर्म आध्यात्मिक चेतना को जगाने की प्रक्रिया है

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ने अपने सहवर्ती संत मुनि परमानंद जी व मुनि कुणाल कुमार जी के साथ दक्षिण हावड़ा से विहार कर रैली के रूप में तेरापंथ भवन में प्रवेश किया। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि संसार से समस्त प्राणी एकांत सुख के अभिलाषी हैं। सुख की कामना से प्रेरित होकर ही जीव निरंतर नाना प्रकार के व्यापारों में लगे रहते हैं, किंतु सुख की प्राप्ति, अभिलाषा को पूर्ण करने वाला विश्व में एकमात्र कोई पदार्थ है तो धर्म है। धर्म आध्यात्मिक चेतना को जगाने की प्रक्रिया है। धर्म के तीन अंग हैं–अध्यात्म, नैतिकता, उपासना।

मुनिश्री ने आगे कहा कि हमारा स्वागत तभी सार्थक होगा जब आप जिनवाणी को सुनकर जीवन में परिवर्तन लाएँगे। जिनवाणी सुनने से शांति मिलती है और भ्रांति दूर होती है।

मुनि परमानंद जी ने कहा कि व्यक्ति को भगवान का स्मरण व संतों की संगति करनी चाहिए। चरित्र को निर्मल व उदारता रखनी चाहिए। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष राकेश संचेती, तेरापंथ ट्रस्ट के अध्यक्ष मदन भंसाली, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष जतन पारख, टीपीएफ के अध्यक्ष अरिहंत सिंघी, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मनोज सिंघी, तेयुप, तेमम ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल के मंगल गीत से हुआ। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री सुरेंद्र बोथरा ने किया।

कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण कार्यक्रम

माधावरम।

गणतंत्र दिवस पर माधावरम में आचार्य महाश्रमण जैन तेरापंथ पब्लिक स्कूल में अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, चेन्नई द्वारा माधावरम में स्थित कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित हुआ।

इस अवसर पर उपाध्यक्ष अलका खटेड़ ने सभी का स्वागत करते हुए बधाईयाँ संप्रेषित की एवं सभी ने राष्ट्रगान के साथ ध्वजारोहण किया। महिला मंडल उपाध्यक्ष अलका खटेड़ एवं गुणवंती खटेड़ कार्यसमिति सदस्य आशा रांका एवं कविता मेडतवाल, क्षेत्र संयोजिका नीलम आच्छा, माधावरम से शोभा बोकड़िया, एकता जैन, सुरेश रांका एवं राजेश खटेड़ भी उपस्थित थे।

✦ तुम दूसरों की बुराइयों को देखते हो। जरा आँख मूँद यह भी खोजो तुम्हारे में कितनी बुराइयाँ हैं?
—आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ आचार्य तुलसी ❑

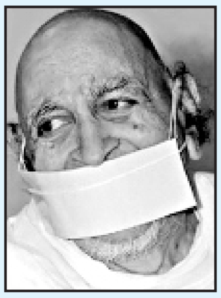

पहला प्रकरण

मनःशुद्धि के उपाय

(१) दृढ़ संकलप। (२) एकाग्रसन्निवेश।

दृढ़ संकल्प—हमारे मन में कामनाएँ उठती रहती हैं। उन कामनाओं में कार्यरूप में बदलने की क्षमता होती है, इसीलिए उन्हें संकल्प कहा जाता है। समुद्र में ऊर्मियों की भाँति संकल्प हमारे मन में उत्पन्न होते हैं और विलीन हो जाते हैं। वे अस्थिर संकल्प होते हैं। उनमें हमें कोई लाभ प्राप्त नहीं होता। स्थिर संकल्प कार्य-रूप में परिवर्तित हुए बिना विलीन नहीं होता। वह दीर्घकाल तक टिका रहता है। उसे भावनात्मक रूप देने—बराबर उसकी पुनरावृत्ति करने से वह रूढ़ हो जाता है। दृढ़ संकल्प में कार्य-रूप में परिणत होने की क्षमता होती है। उसके द्वारा हम मन के स्वभाव को बदल सकते हैं। बुरे विचारों को छोड़ने व अच्छे विचारों की आदत डालने में दृढ़ संकल्प हमारी बहुत सहायता करता है।

एकाग्रसन्निवेशन—एकाग्रता मन की विरोधावस्था नहीं है। यह उसकी किसी एक विषय में विरोधावस्था है। अनेक मार्गों में जाते हुए प्रवाह को एक मार्ग में मोड़ देना है। नदी का प्रवाह जब अनेक मार्गों में बहता है, तब वह क्षीण हो जाता है। एक प्रवाह में जो शक्ति होती है, वह विभक्त प्रवाहों में नहीं हो सकती। सूर्य की बिखरी रश्मियों में वह शक्ति नहीं होती, जो केंद्रित किरणों में होती है। मन का प्रवाह भी एक आलंबन की ओर निरंतर बहता है तब उसमें अकल्पित शक्ति आ जाती है। एकाग्रता के क्षेत्र में मन की शांति और स्थिरता का अर्थ है चिंतन-प्रवाह को एक ही दिशा में प्रवाहित करना। मन के एकाग्र प्रवाह की अनेक पद्धतियाँ हैं। उनमें से कुछ पद्धतियों को यहाँ प्रस्तुत किया जाता है—

(१) द्रष्टा की स्थिति—मन की चंचलता को रोकने का यत्न मत कीजिए। वह जहाँ जैसे जाता है, उसे देखते रहिए। उस समय दृश्य या ज्ञेय मन को ही बना लीजिए। इस प्रकार तटस्थ द्रष्टा के रूप में जागरूक रहकर आप मन का अध्ययन ही नहीं कर पाएँगे, किंतु उस पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेंगे।

(२) विकल्पों की उपेक्षा—आपके मन में जो विकल्प उठते हैं, उनकी उपेक्षा कीजिए। जो प्रश्न उठते हैं, उनके उत्तर मत दीजिए। जैसे प्रश्न करने वाला व्यक्ति उपेक्षा पाकर (उत्तर न पाकर) मौन हो जाता है, वैसे ही मन भी उपेक्षा पाकर (प्रश्नों का उत्तर न पाकर) शांत हो जाता है।

(३) अप्रयत्न—मन को स्थिर करने का बलात् प्रयत्न मत कीजिए। अप्रयत्न से मन सहज ही शांत हो जाता है। शरीर को स्थिर और श्वास को मंद कीजिए। जैसे-जैसे शरीर स्थिर और श्वास मंद होगा, वैसे मन अपने आप शांत हो जाएगा।

(४) श्वास-योग—मन का श्वास की गति के साथ योग कीजिए। श्वास के आने-जाने के क्रम पर ध्यान लगाइए, श्वास की गिनती कीजिए, मन अपने आप श्वास में लीन हो जाएगा।

(५) आकृति-आलंबन—अपने आराध्य की आकृति का मानसिक चित्र बनाइए। पहले देश-काल और बाह्य वातावरण के साथ उस आराध्य की आकृति की कल्पना कीजिए, फिर उसे मानसिक चित्र में बदल दीजिए। वह चित्र बहुत स्पष्ट और प्राणवान जैसा कीजिए।

यदि प्रारंभ में ऐसा करना कठिन लगे तो दृश्य आकृतियों पर मन को स्थापित कीजिए और साथ-साथ मानसिक चित्र बनाने का अभ्यास भी करते रहिए।

(६) शब्द-आलंबन—इष्ट मंत्रों में मन को लगाइए। मन का प्रवाह शब्द की दिशा में प्रवाहित होकर अन्य विकल्पों से शून्य हो जाता है। जप की प्रक्रिया में इसे विस्तार से बताया जाएगा।

(७) दृढ़ इच्छा-शक्ति—इच्छा-शक्ति भावों से उत्पन्न होती है। भावों की प्रबलता का नाम ही इच्छा-शक्ति है। भावों को इच्छा-शक्ति के रूप में बदलने का साधन है—स्वतः सूचना (Auto Suggestion)। मन को सूचना देने से भावों में उत्तेजना आरंभ होती है और वही इच्छा-शक्ति के रूप में परिणत हो जाती है। इच्छा-शक्ति के विकास का निरंतर अभ्यास करने से वह दृढ़ हो जाती है। दृढ़ इच्छा-शक्ति से मन की एकाग्रता सहज ही सध जाती है।

(२५) मिथ्यादृष्टिविरतिः प्रमादः कषायों योगश्च परमाणुस्कंधाकर्षणहेतवः।।
(२६) सम्यग्दृष्टिर्विरतिरप्रमादोऽकषायोऽयोगश्च तद्विकर्षणहेतवः।

(२५) मिथ्यादृष्टि, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग (मन, वाणी तथा शरीर की प्रवृत्ति) के द्वारा आत्मा के साथ परमाणु-स्कंधों का संयोग होता है।

(२६) सम्यग्दृष्टि, विरति, अप्रमाद, अकषाय और अयोग (मन, वाणी तथा शरीर की प्रवृत्तियों का निरोध) से आत्मा के साथ परमाणु-स्कंधों का योग रुक जाता है।

बंध और मुक्ति के हेतु

बंध और मुक्ति की मीमांसा बहुत विस्तार से की गई है। कभी-कभी ऐसा होता है कि बहुत विस्तार से कही गई बात स्मृति में नहीं रहती। तब उसका संक्षेप करना आवश्यक हो जाता है। संक्षेप में बंध का हेतु एक है और मोक्ष का हेतु भी एक ही है। इसी तथ्य को आचार्य हेमचंद्र ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—

आस्रवो भवहेतुः स्यात् संवरो मोक्षकारणम्।
इतीयमार्हती दृष्टिः सर्वमन्यत् प्रपंचनम्।।

आस्रव बंध का हेतु और संवर मोक्ष का हेतु। जैन-धर्म का मौलिक प्रतिपाद्य इतना ही है। शेष सब उसका विस्तार है।

योग-साधना के द्वारा हम मुक्ति का अनुभव करना चाहते हैं, किंतु आस्रव के द्वारा बंध प्रवाहित होता रहता है, इसलिए हम मुक्ति का अनुभव नहीं कर पाते।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१२५)

आँधी में तूफानों में भी
जिसकी गति में रही रवानी।
अंकित कुदरत के कण-कण में
तुलसी! तेरी अमर कहानी।।

चिंतन के वातायन खोले
बदली तुमने युग की धारा
उगा रोशनी की फसलों को
बिछा दिया तम में उजियारा
तूफाँ की हद में आकर भी
निष्ठा से पा लिया किनारा
आहत मानवता के मन को
जब-तब तुमने दिया सहारा
अंगारों पर चले अभय हो
थी कोई ताकत रूहानी।।

उन राहों पर चलकर आए
चले कभी हम साथ तुम्हारे
पूछा हर पथ ने आतुर हो
कहाँ आज वे तुलसी प्यारे
जनता की यादों में अब भी
तैर रहा है नाम तुम्हारा
बसी हुई सूरत आँखों में
किंतु न तुमको कहीं निहारा
अमियभरी वाणी सुन जनता
हो जाती पूरी दीवानी।।

घिरी जहाँ अंधियारी रातें
तुमने उजली भोर उगाई
घोर निराशा की घड़ियों में
आशा की उम्मीद जगाई
उत्पथ में भटके कदमों को
मंजिल का अहसास कराया
स्वयं धूप झेली जीवन भर
दी जन-जन को शीतल छाया
देव! तुम्हारे अवदानों की
शब्दों में चर्चा बेमानी।।

नैतिकता की अलख जगाकर
दिशा जगत की तुमने मोड़ी
नया मोड़ अभियान चलाकर
रूढ़िवाद की कारा तोड़ी
जीवन के हर विषम मोड़ पर
तुमने अनगिन दीप जलाए
कितने पथभूलों को तुमने
मंजिलगामी पथ दिखाए
देते रहना समय-समय पर
सपनों में भी भीख सुहानी।।

(क्रमशः)

संबोधि

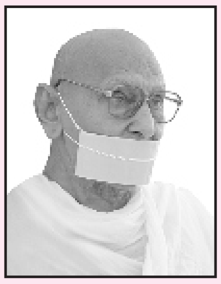

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२६) **कर्मानुभावतो जीवः, नानागतिषु गच्छति।**
परोक्षे द्वे प्रविद्येते, संशयस्तत्र जायते।।

कर्म के अनुभाव से जीव नाना गतियों में परिभ्रमण करता है। नरक और स्वर्ग—ये दो परोक्ष हैं। परोक्ष के विषय में संशय उत्पन्न हो जाता है।

संशय का क्षेत्र प्रत्यक्ष नहीं है। मनुष्य और तिर्यंच गति जैसे प्रत्यक्ष है वैसे नरक और देव गति नहीं है। हालाँकि मनुष्य व तिर्यंच गति भी स्थूल रूप से प्रत्यक्ष है, सूक्ष्म रूप से नहीं। इनमें भी संशय के कई कारण बन सकते हैं। नरक और देव परोक्ष होते हुए भी कुछ-कुछ स्थितियों में प्रत्यक्ष जैसे परिचय करा देते हैं। सूक्ष्म शरीर के फोटो, सूक्ष्म जगत की विचित्र विचित्र घटनाएँ पूर्वजन्म की स्मृतियाँ, सूक्ष्म-शरीरों की स्थूल शरीर जैसी चेष्टाएँ तथा अनुकूल व्यक्तियों का सहयोग व प्रतिकूलों का सहयोग आदि ऐसे कर्तव्य हैं जिनसे उनके अस्तित्व का स्पष्ट बोध हो जाता है।

प्रत्यक्षद्रष्टा—आत्मज्ञानी आप्तपुरुषों का सहवास अथवा उनका उपदेश भी संशय के निराकरण में हेतु बनता है। आत्मद्रष्टाओं के लिए कुछ भी अप्रत्यक्ष नहीं है। वे सब कुछ सहज देखते हैं और जैसा देखते हैं वैसा ही निरूपण करते हैं। विश्वास या श्रद्धा के वे ही एकमात्र केंद्र होते हैं। इसलिए कहा है—'वह सत्य है, निःशंकित है, परिपूर्ण है, अनुत्तर है, जिसका निरूपण जिनों-आत्मद्रष्टाओं ने किया है।' भगवान् महावीर इसी संदेह की निवृत्ति के लिए मेघ से कह रहे हैं कि 'नरक नहीं है, स्वर्ग नहीं है' इस प्रकार 'संज्ञा' अवधारणा या कल्पना न करे।' वे हैं यह असंदिग्ध है। इसका कारण है—तदनुरूप कर्मों का विपाक, फल। सत्कर्मों का फल स्वर्ग है और असत् कर्मों का फल नरक।' दुःख और सुख कर्म का ही अनुभाग-विपाक है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न १९ : स्वाध्याय किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : अध्यात्मशास्त्र के अध्ययन को स्वाध्याय करते हैं। उसके पाँच प्रकार हैं—
(१) वाचना (अध्यापन) (२) पृच्छता (पूछना)
(३) परावर्तन (कंठस्थ पाठ को चितारना) (४) अनुप्रेक्षा (अर्थ चिंतन)
(५) धर्मकथा।

प्रश्न २० : ध्यान किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : योग निरोध को ध्यान कहा जाता है, इस परिभाषा के आधार पर ध्यान के गीत प्रकार होते हैं—
(१) मानसिक, (२) वाचिक, (३) कायिक।
एकाग्र चिंतन को ध्यान कहा जाता है। इस परिभाषा के आधार पर ध्यान के चार प्रकार होते हैं।
(१) आर्त्त, (२) रौद्र, (३) धर्म्य, (४) शुक्ल।
इनमें प्रथम दो अप्रशस्त, अंतिम दो प्रशस्त हैं।

प्रश्न २१ : व्युत्सर्ग किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : शरीर आदि की क्रियाओं को विसर्जित करना व्युत्सर्ग है। उसके दो प्रकार हैं—
(१) द्रव्य व्युत्सर्ग (२) गण व्युत्सर्ग
द्रव्य व्युत्सर्ग के चार प्रकार हैं—
(१) शरीर व्युत्सर्ग (२) गण व्युत्सर्ग
(३) उपधि व्युत्सर्ग (४) भक्तपान व्युत्सर्ग
भाव व्युत्सर्ग के तीन प्रकार हैं—
(१) कषाय व्युत्सर्ग – क्रोध आदि कषायों का विसर्जन।
(२) संसार व्युत्सर्ग – परिभ्रमण का विसर्जन।
(३) कर्म व्युत्सर्ग – कर्म पुद्गलों का विसर्जन।
काय-शरीर का व्युत्सर्ग करना कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग खड़े, बैठे और लेटे—इन तीनों अवस्थाओं में किया जा सकता है।

(क्रमशः)

उपासना

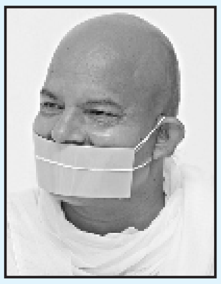

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य तुलसी

जमाली! यह लोक शाश्वत भी है और अशाश्वत भी। लोक कभी नहीं था, नहीं है, नहीं होगा—ऐसा नहीं है। किंतु यह था, है और रहेगा। इसलिए यह शाश्वत है। अवसर्पिणी के बाद उत्सर्पिणी होती है और उत्सर्पिणी के बाद फिर अवसर्पिणी। इस कालचक्र की दृष्टि से लोक अशाश्वत है। इसी प्रकार जीव भी शाश्वत और अशाश्वत दोनों है। त्रैकालिक सत्ता की दृष्टि से वह शाश्वत है। वह कभी नैरयिक बन जाता है, कभी तिर्यंच, कभी मनुष्य और कभी देव। इस रूपांतरण की दृष्टि से वह अशाश्वत है।' जमाली ने भगवान् की बातें सुनीं पर वे अच्छी नहीं लगीं। उन पर श्रद्धा नहीं हुई। वह उठा, भगवान् से अलग चला गया। मिथ्या प्ररूपणा करने लगा—झूठी बातें कहने लगा। मिथ्या अभिनिवेश से वह आग्रही बन गया। दूसरों को भी आग्रही बनाने का जीभर जाल रचा। बहुतों को झगड़ाखोर बनाया। इस प्रकार की चर्चा चलती रही। लंबे समय तक श्रमण-वेश में साधना की। अंतकाल में एक पक्ष की संलेखना की। तीस दिन का अनशन किया। किंतु मिथ्या प्ररूपणा या झूठे आग्रह की आलोचना नहीं की, प्रायश्चित्त नहीं किया। इसलिए आयुष्य पूरा होने पर वह लांतक-कल्प (छठे देवलोक) के नीचे किल्विषिक (निम्न श्रेणी का) देव बना।

(२) जीव-प्रादेशिकवाद

दूसरे निह्नव का नाम तिष्यगुप्त था। इनके आचार्य 'वसु' चतुर्दशपूर्वी थे। वे तिष्यगुप्त को आत्मप्रवादपूर्व पढ़ा रहे थे। उसमें भगवान् महावीर और गौतम का संवाद आया—

गौतम—'भगवान्! क्या जीव के एक प्रदेश को जीव कहा जा सकता है?'

भगवान्—'नहीं!'

गौतम—'भगवान्! क्या दो, तीन यावत् संख्यात प्रदेश को जीव कहा जा सकता है?'

भगवान्—'नहीं! असंख्यात प्रदेशमय चैतन्य पदार्थ को ही जीव कहा जा सकता है।'

यह सुन तिष्यगुप्त ने कहा—'अंतिम प्रदेश के बिना शेष प्रदेश जीव नहीं हैं। इसलिए अंतिम प्रदेश ही जीव है।'

गुरु के समझाने पर भी अपना आग्रह नहीं छोड़ा, तब उन्हें संघ ने पृथक् कर दिया। वे जीव-प्रदेश संबंधी आग्रह के कारण जीव प्रादेशिक कहलाए।

(३) अव्यक्तवाद

श्वेतविका नगरी के पौलाषाढ़ चैत्य में आचार्य आषाढ़ विहार कर रहे थे। उनके शिष्यों में योग-साधना का अभ्यास चल रहा था। आचार्य का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आचार्य ने सोचा—शिष्यों का अभ्यास अधूरा रह जाएगा। वे फिर अपने शरीर में प्रविष्ट हो गए। शिष्यों को इसकी जानकारी नहीं थी। योग-साधना का क्रम पूरा हुआ। आचार्य देवरूप में प्रकट हो बोले—'श्रमणो! मैंने असंयत होते हुए भी संयतात्माओं से वंदना कराई, इसलिए मुझे क्षमा करना।' सारी घटना सुना देव अपने सीन पर चले गए। श्रमणों को संदेह हो गया कि कौन जाने कौन साधु है और कौन देव? निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। यह अव्यक्त मत कहलाया। आषाढ़ के कारण यह विचार चला, इसलिए इसके प्रवर्तक आचार्य आषाढ़ हैं, ऐसा कुछ आचार्य कहते हैं, पर वास्तव में इसके प्रवर्तक आषाढ़ के शिष्य ही होने चाहिए। ये तीसरे निह्नव हुए।

(४) सामुच्छेदिकवाद

अश्वमित्र अपने आचार्य कौण्डिल के पास पूर्व-ज्ञान पढ़ रहे थे। पहले समय के नारक विच्छिन्न हो जाएँगे, दूसरे समय के भी विच्छिन्न हो जाएँगे, इस प्रकार सभी जीव विच्छिन्न हो जाएँगे—यह पर्यायवाद का प्रकरण चल रहा था। उन्होंने एकांत समुच्छेद का आग्रह किया। वे संघ से पृथक् कर दिए गए। उनका मत 'सामुच्छेदिकवाद' कहलाया। वे चौथे निह्नव हुए।

(क्रमशः)

✦ बीता हुआ समय पुनः नहीं मिलता। अतः क्षण-क्षण का उपयोग करो।
—आचार्यश्री महाश्रमण

विशाल नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा परामर्श एवं लैंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन

राजलदेसर।

तेरापंथी सभा, राजलदेसर की संचालन व्यवस्था के अंतर्गत पूनमचंद-कानकंवरी बैद फाउंडेशन के आर्थिक सौजन्य से नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा परामर्श एवं लैंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ मुनि रणजीत कुमार जी एवं उनके सहयोगी संत मुनि कौशल जी के नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया।

सभा के अध्यक्ष विमल सिंह दुधोड़िया ने बताया कि ५५० से अधिक मरीजों का रजिस्ट्रेशन किया गया। शिविर में मोहन जैन आई हॉस्पिटल, सुजानगढ़ के नेत्र विशेषज्ञ डॉ० अपूर्व कोटिया और उनकी टीम तथा भोजक आई हॉस्पिटल, सरदारशहर के डॉ० चंद्रेश सुथार एवं उनकी टीम ने मरीजों की आँखों की जाँच की। जाँच के पश्चात दवाइयाँ एवं चश्मे नि:शुल्क वितरण किए गए।

इस अवसर पर निर्मल कुमार बैद, जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी शासन सेवी पन्नालाल बैद, स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी प्रभारी डॉ० संजय बुंदेला, वरिष्ठ श्रावक हुणतमल नाहर मुख्य अतिथि थे।

नमस्कार महामंत्र के पश्चात भिक्षु भजन मंडली ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया एवं तेममं ने स्वागत गीत का संगान किया। इस अवसर पर मुनि कौशल कुमार जी एवं शासनसेवी पन्नालाल बैद ने भी उपस्थित जनों को संबोधित किया। सभा के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों ने मुख्य अतिथियों का सम्मान किया।

अभातेमम की पूर्व अध्यक्ष श्राविका गौरव स्व० सौभाग देवी बैद को मरणोपरांत स्मृति विशेष के रूप में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सम्मान प्रदान किया गया। तेममं द्वारा प्रदत्त स्मृति विशेष सम्मान उनके पति एवं जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंधन न्यासी शासनसेवी पन्नालाल बैद ने ग्रहण किया। अभिनंदन पत्रों का वाचन सभा अध्यक्ष विमल सिंह दुधेड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेमदेवी विनायकिया एवं मंत्री सविता बच्छावत ने किया।

कार्यक्रम का संचालन सभा के उपमंत्री पवन बोथरा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों का सहयोग रहा। कुल ५७२ मरीजों की जाँच की गई, जिनमें १३५ ऑपरेशन योग्य मरीजों का चयन किया गया।

परिचय प्रेरणा गोष्ठी का आयोजन

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी का साउथ हावड़ा सभा में पहली बार पदार्पण हुआ। मुनिश्री के सान्निध्य में 'परिचय प्रेरणा गोष्ठी' कार्यक्रम साउथ हावड़ा सभा भवन में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। जिसमें परिषद् की महाश्रमण भजन मंडली से हर्ष बांठिया, जितेंद्र बैद, नवीन संचेती और मोहित सिंधी ने विजय गीत से कार्यक्रम का आगाज किया। तेयुप अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने मुनिश्री का एवं अन्य सभी का स्वागत किया। मुनिश्री को परिषद् का परिचय देते हुए परिषद के कार्यों की जानकारी दी।

सभी युवा साथियों एवं किशोर मंडल ने एक के बाद एक अपना-अपना परिचय मुनिश्री के सामने रखा और वह किस-किस रूप में परिषद को अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं मुनिश्री को बताया।

मुनि कुणाल कुमार जी ने एक गीतिका के माध्यम से सभी युवाओं में जोश भरा। मुनि जिनेश कुमार जी ने परिचय के बाद सभी को अपना प्रेरणा पाथेय दिया। मुनिश्री ने इस युवाशक्ति को और भी बढ़ाने की बात की और किशोर मंडल के कार्यों और उनके धर्म के प्रति समर्पण को भी सराहा।

कार्यक्रम में परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा, संस्थापक अध्यक्ष राजेश दुगड़, पूर्व अध्यक्ष सूर्यप्रकाश डागा एवं अनेक पदाधिकारीगण सहित ४० सदस्यों और १६ किशोर मंडल सदस्यों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री रोहित बैद ने किया।

आध्यात्मिक मिलन कार्यक्रम का आयोजन

औरंगाबाद।

तेरापंथ भवन, औरंगाबाद में साध्वी मधुस्मिता जी एवं साध्वी त्रिशला कुमारी जी के आध्यात्मिक मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी के मंगल महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

सभा के अध्यक्ष कौशिक सुराणा ने साध्वीश्री जी का स्वागत करते हुए अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। महिला मंडल के समवेत स्वर ने सभी को भावविभोर कर दिया। तेरापंथ महासभा के कार्यकारिणी सदस्य डॉ० अनिल नाहर एवं वरिष्ठ श्रावक मदन आच्छा ने अपने विचार व्यक्त किए।

मेजबान साध्वी मधुस्मिता जी के ग्रुप द्वारा प्रस्तुत गीतिका ने पूरे परिसर में समा बाँध दिया एवं मेहमान साध्वी त्रिशला कुमारी जी के ग्रुप द्वारा प्रस्तुत गीतिका ने उपस्थित धर्मसभा को ॐ अर्हम् बोलने के लिए विवश कर दिया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि आज का दिन मेरे जीवन का अविस्मरणीय दिन है। २२ वर्षों के बाद साध्वीश्री जी से मिलना हुआ है। साध्वी मधुस्मिता जी हमारे धर्मसंघ की वरिष्ठ साध्वी हैं, आपकी विद्वता, वत्सलता, व्यवहारकुशलता अनुकरणीय है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि जहाँ आध्यात्मिक मिलन होता है वहा कुछ नए तथ्यों की उपलब्धि होती है। हम भी साध्वीश्री जी से मिले, हमें भी बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि धर्मसंघ की शोभा हमारी शोभा है और हमारी शोभा धर्मसंघ की शोभा है। धर्मसंघ कुबेर का खजाना है इसे हम जितना चाहे उतना ही आध्यात्मिक वैभव बटोर सकते हैं। धर्मसंघ सिंधु है जिसमें रहने वाली हर सीप मोती बनकर निखरती है। उन्हीं चमकने वाली मुक्ता मणियों में एक मुक्ता है साध्वी त्रिशला कुमारी जी। वर्षों बाद इनसे मिलकर आध्यात्मिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि मिलना विकास एवं प्रकाश का प्रतीक है। प्रेम जीवन का सबसे सुंदर रंग है। प्रेम महामंत्र है इसमें पूरी दुनिया को वश में करने की ताकत है। कार्यक्रम का संचालन कविता मरलेचा ने किया।

जीवन का अंग बने शिष्टाचार

चंडीगढ़।

शिष्टाचार हमारे जीवन का एक अनिवार्य अंग है। विनम्रता, सहजता से वार्तालाप, मुस्कराकर जवाब देने की कला प्रत्येक व्यक्ति को मोहित कर लेती है। जो व्यक्ति शिष्टाचार से पेश आते हैं वे बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ न होने पर भी अपने-अपने क्षेत्र में पहचान बना लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे शख्स से शिष्टाचार और विनम्रता की आकांक्षा करता है। शिष्टाचार का पालन करने वाला व्यक्ति स्वच्छ, निर्मल और दुर्गुणों से परे होता है। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन में सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि यदि व्यक्ति किसी समस्या या तनाव से ग्रस्त है, लेकिन ऐसे में भी वह शिष्टाचार के साथ पेश आता है तो अनेक लोग उसकी समस्या का हल सुलझाने के लिए उसके साथ खड़े हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वयं ही समस्या के समाधान तक पहुँच जाता है। शिष्टाचार को अपने जीवन का एक अंग मानने वाला व्यक्ति अक्सर अहंकार, ईर्ष्या, क्रोध आदि से मुक्त होता है। ऐसा व्यक्ति हर जगह अपनी छाप छोड़ता है।

श्री शिव प्रताप बजाज महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय में कम्प्यूटर सेट व प्रिंटर भेंट

उदयरामसर।

तेरापंथी सभा द्वारा विद्यालय एवं विद्यार्थियों के हित में एक कम्प्यूटर सेट तथा प्रिंटर श्री शिव प्रताप बजाज महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, उदयरामसर को भेंट किया गया। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा संरक्षक लूणकरण छाजेड़ ने विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को संबोधित किया तथा विद्यार्थियों को जीवन में सफल होने का मूलमंत्र बताया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, उपाध्यक्ष नवरतन बोथरा, कोषाध्यक्ष जतन संचेती, सहमंत्री पवन छाजेड़, संगठन मंत्री मांगीलाल लुणिया, लूणकरण बोथरा द्वारा विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष जैसराज सिंह यादव, उपाध्यक्ष आसकरण शर्मा, सदस्य वीर किशन सिंह यादव, प्रधानाचार्य रतनलाल छलाणी, कम्प्यूटर शिक्षक विकास शर्मा, कनिष्ठ सहायक राजेंद्र प्रजापत को कम्प्यूटर सेट व प्रिंटर सौंपे गए।

इस अवसर पर विद्यालय प्रभारी सरोज बाला मोदी, अनिल यादव सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। प्रधानाचार्य ने उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत किया तथा धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन वसीम अकरम अंसारी द्वारा किया गया।

परिवार कार्यशाला का आयोजन

गुंटुर (आंध्र प्रदेश)।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जैन धर्मशाला में 'कैसे जीएँ आनंद का जीवन?' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि यदि परिवार को स्वस्थ रखना है तो सात वारों को आनंदमय बनाना होगा। यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो जिंदगी में आने वाले बाहरी निमित्तों पर ध्यान न दें। जीवन की छोटी यात्रा का जी-भर आनंद लें। आपके साथ कोई कैसा ही व्यवहार क्यों न करे, आप अपनी अच्छी सोच बनाए रखें।

साध्वीश्री जी ने कहा कि पारस्परिक सहनशीलता आनंदमय जीवन के लिए परमावश्यक है। जीवन की अधिकांश समस्याओं का कारण वाणी का असंयम है। बोलने का तरीका बदलें। आनंद के जीवन के लिए अपने व्यवहार को बदलने का संकल्प लें। वर्तमान के जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों से दुखी न हों, भविष्य के प्रति जागरूक बनें, शुभ भविष्य के निर्माण में शक्ति का सम्यक् नियोजन करें।

साध्वीवृंद द्वारा गीत का संगान किया गया। चेन्नई से समागत महिला मंडल कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर ने कहा कि चेन्नईवासियों ने साध्वी मंगलप्रज्ञा जी जैसा प्रबुद्ध चातुर्मास प्राप्त किया। आपने घर-घर में अध्यात्म की लौ जला दी। उपलब्धि भरा चातुर्मास हमेशा याद रहेगा।

साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि हमारे शरीर का प्रत्येक अंग हमें जीवन जीने का सही तौर-तरीका सिखाता है। हमारी सोच सकारात्मक और हृदय विशाल हो। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने किया।

✦ ज्ञान किसी माध्यम से हो, किंतु ज्ञान होने के बाद कल्याण को स्वीकार करने और पाप को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

– आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

जलगाँव

तेरापंथी सभा के अंतर्गत जलगाँव ज्ञानशाला ने भुसावल शहर के पास यावल रोड पर स्थित नंदग्राम पार्क में पिकनिक का आयोजन किया। कुल ३३ ज्ञानार्थी बच्चे, ६ टीचर्स और २ तेयुप सदस्य इसमें सहभागी बने।

नंदग्राम के खुले वातावरण में ज्ञानार्थी बच्चों ने गौसेवा, एडवेंचर्स, झूले, नौकायन, रैन डांस, पिक्स स्पोट्स एवं अन्य एक्टिविटीज का आनंद लिया। सभी टीचर्स ने ज्ञानार्थी बच्चों को अलग-अलग प्रकार के ज्ञानवर्धक खेल खिलाए।

सह-संयोजिका मोनिका छाजेड़, टीचर्स मैनादेवी छाजेड़, रितु छाजेड़, सुषमा चोरड़िया, रौनक चोरड़िया, दक्षता सांखला सभी ने हर कार्य में विशेष सहयोग दिया।

सभा अध्यक्ष जितेंद्र चोरड़िया, मंत्री नीरज समदड़िया, ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरड़िया, मुख्य प्रशिक्षिका विनीता समदड़िया ने सभी व्यवस्थाएँ संभाली।

तेयुप से गौतम चोरड़िया एवं अरविंद छाजेड़ ने सहयोग दिया। सभी ज्ञानार्थी बच्चों व अभिभावकों का ज्ञानशाला परिवार जलगाँव की ओर से धन्यवाद एवं आभार।

सिकंदराबाद

तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में नगर में संचालित २१ ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों व प्रशिक्षिकाओं के लिए अकेडमिक वर्ष-२०२२ के सफलतापूर्वक परिसंपन्नता के उपलक्ष्य में पिकनिक रखी गई। जिसमें लगभग २२५ की संख्या में उपस्थिति रही। यह पिकनिक समर ग्रीन रेसोर्ट में रखी गई। जहाँ पर बच्चों के लिए बहुत ही मनोरंजक इनडोर व आउटडोर गेम्स थे।

आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी, सह-संयोजक सरोज लोढ़ा, क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा, सह-संयोजक सरिता नखत व यशोदा कोठारी के नेतृत्व में पिकनिक का सुंदर-व्यवस्थित आयोजन रहा। सभा सिकंदराबाद द्वारा ज्ञानशाला टीम परिवार के लिए नगर में चार जगह शिवरामपल्ली, हिमायतनगर सभा भवन, डीवी कॉलोनी तेरापंथ भवन व कारखाना के पास बसों की व्यवस्था की। अध्यक्ष बाबूलाल बैद, मंत्री सुशील संचेती, ज्ञानशाला विभाग संयोजक सुनील बोहरा, परामर्शक लक्ष्मीपत बैद व सभी पदाधिकारियों ने बसों के स्टोप के पास पहुँचकर सभी का उत्साहवर्धन किया आभार व्यक्त किया। पिकनिक दो चरणों में आयोजित की गई। दोपहर के बाद पुरस्कार वितरण व सम्मान समारोह रखा गया।

ज्ञानार्थी परीक्षा २०२१ व २०२२ के हेदराबाद स्तरीय सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले सभी ज्ञानार्थियों को ट्राफी प्रदान की गई। जिन्होंने इन दो वर्षों में शिशु संस्कार भाग-५ कंप्लीट किया है उनका दीक्षांत समारोह रखा गया। एरिया सर्वोच्च आने वाले ज्ञानार्थियों को मेडल व सभी संभागी ज्ञानार्थियों को सार्टिफिकेट प्रदान किए गए। प्रशिक्षक परीक्षा २०१६ व २० में संभागी प्रशिक्षिकाओं को केंद्र से प्राप्त प्रशस्ति-पत्र व सभा, सिकंदराबाद द्वारा मोमेंटो प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का संचालन परीक्षा व्यवस्थापक पुष्पा बरड़िया, सरिता नखत व यशोदा कोठारी ने किया। शिवरामपल्ली, बोइनपल्ली, कबाड़ीगुड़ा, मारडपल्ली, सुचित्रा, हिमायतनगर ज्ञानशालाओं ने सम्मान में अपनी आकर्षक प्रस्तुतियाँ रखीं। वर्ष २०२२ ज्ञानार्थी परीक्षा में डीवी कॉलोनी ज्ञानशाला के १३ ज्ञानार्थियों को हेदराबाद स्तरीय सर्वोच्च स्थान हासिल करने पर इस ज्ञानशाला का मोमेंटो द्वारा अभिनंदन किया गया। परामर्शक अंजु बैद व ५१ प्रशिक्षिकाओं की सभी कार्यक्रमों में उपस्थिति रही।

राजसमंद

ज्ञानशाला राजनगर द्वारा एक दिवसीय स्पोर्ट्स डे का आयोजन भिक्षु निलिमय, राजसमंद में आयोजित किया गया। ज्ञानशाला संयोजिका संगीता कोठारी ने बताया कि एक दिवसीय स्पोर्ट्स डे का आयोजन मुख्य प्रशिक्षिका सीमा मांडोत की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने नमस्कार महामंत्र और अर्हम वंदना से की।

स्पोर्ट्स डे में ज्ञानार्थियों के लिए अलग-अलग खेल प्रतियोगिता रखी गई। जिसमें ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं और ज्ञानार्थी बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। स्पोर्ट्स डे में ५ से ७ वर्ष के बच्चों के लिए जलेबी रेस, बलून गेम और गलास गेम, ८ से १० वर्ष के बच्चों के लिए रनिंग रेस, रस्सी रेस और चॉकलेट रेस तथा ११ से १५ वर्ष के बच्चों के लिए बैलून रेस, लेग रेस, मैरीगोल्ड बिस्किट गेम सहित अनेक मनोरंजक खेल-कूद की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी गेम्स प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस एक दिवसीय स्पोर्ट्स डे के आयोजन में सभी ६५ ज्ञानार्थी बच्चों एवं १२ प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही।

संयोजिका संगीता कोठारी और सह-संयोजिका उषा कावड़िया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

द पावर ऑफ रेसोल्यूशन' शिल्पशाला

नोखा।

मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत दूसरे दिन शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाएँ हमारे संघ का आधार हैं। मर्यादा में रहने से जीवन का विकास होता है। हमें भिक्षु विचार दर्शन को अवश्य पढ़ना चाहिए। साध्वी पुलकितयशा जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा 'द पावर ऑफ रेसोल्यूशन' शिल्पशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में किया गया।

सर्वप्रथम महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। मंत्री प्रीति ने बताया कि हर जीव में शक्ति होती है किंतु संकल्प शक्ति केवल मनुष्य में ही होती है। चार गति और ८४ लाख में केवल मनुष्य गति ऐसी है, जिसमें संकल्प लेने की शक्ति होती है। क्योंकि वह चिंतन, मनन, तर्क करना जानता है।

साध्वी प्रभातप्रभा जी ने बताया कि हमें अपने व्यस्त जीवन में लक्षित कार्यों के लिए समय जरूर निकालना चाहिए। हम छोटे-छोटे संकल्प करें। संकल्प व्यक्ति को अपने सामर्थ्य के हिसाब से ही करने चाहिए एवं प्रत्येक संकल्प को हमें पूरा करना चाहिए। संकल्प पूरा करने के लिए हमें मेहनत और समय नियोजन करना जरूरी होता है।

कार्यक्रम में डॉ० प्रेमसुख मरोठी, इंद्रचंद बैद, अनुराग बैद, सुनील बैद, सुमन देवी मरोठी, सोनू बोथरा, धारा लुणावत आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

कार्यशाला के अंत में मंत्री प्रीति मरोठी द्वारा आए हुए सभी वक्ताओं एवं बहनों का आभार ज्ञापन किया गया। कार्यशाला का संयोजन मंत्री प्रीति मरोठी का रहा।

वाणी का सदुपयोग भी साधना है

दिल्ली।

अरिहंत नगर जैन स्थानक में तेरापंथी सभा, दिल्ली तथा तेरापंथी सभा, पश्चिम विहार के संयुक्त तत्त्वावधान में मुनि जयकुमार जी का मंगल भावना समारोह मनाया गया। इस अवसर पर मुनि जयकुमार जी ने उपस्थित श्रावक समाज को धर्म प्रेरणा देते हुए कहा कि हर कार्य को करते हुए अपनी आत्मा को स्मृति में रखना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि वाणी संयम तो साधना है ही पर इसके साथ वाणी का सदुपयोग भी साधना है।

इस अवसर पर मुनि मुदित कुमार जी ने जागरूक जीवन जीने की प्रेरणा दी। मंगलाचरण संजय चोरड़िया ने तथा स्वागत पश्चिम विहार सभाध्यक्ष सुशील जैन ने किया। सभा भवन ट्रस्ट सचिव डॉ० कमल सेठिया ने तेरापंथ सभा भवन पश्चिम विहार में पधारने हेतु मुनिश्री से अर्ज की। मंगल भावना के स्वरों को दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, महिला मंडल की पूर्व अभातेमम अध्यक्षा पुष्पा बैंगाणी, टीपीएफ अध्यक्ष राजेश गेलड़ा, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष कमल बैंगानी तथा अणुव्रत न्यास के शांति कुमार जैन ने प्रस्तुतियाँ दी।

सुप्रसिद्ध गजल गायक जितेंद्र सिंह जम्वाल ने गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न क्षेत्रीय सभाओं के प्रतिनिधि स्वरूप संजय चोरड़िया, विजय जैन, बाबूलाल दुगड़, संजय सुराणा तथा प्रसन्न पुगलिया ने मुनिश्री के प्रवास हेतु कृतज्ञता और विहार हेतु मंगलकामना की। महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, पूर्वाध्यक्ष दिल्ली तेजकरण सुराणा तथा एसएस जैन सभा अरिहंत के महामंत्री जसवंत जैन ने मुनि जयकुमार जी को एक साधक संत बताते हुए मंगल भावना व्यक्त की।

ललित श्यामसुखा ने गीत के माध्यम से विदाई की भावना रखी। मुनि मुदित कुमार जी ने मुनि जयकुमार जी द्वारा दी गई आत्मोत्थान की प्रेरणा को जीवन में उतारने का आह्वान किया। आभार ज्ञापन पश्चिम विहार सभा के मंत्री ललित डागा व कार्यक्रम का संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

द पावर ऑफ रसोल्यूशन कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, जसोल द्वारा सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में द पावर ऑफ रेसोल्यूशन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

महिला मंडल की बहनों ने मिलकर सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत की। प्रेरणा गीत से सामूहिक मंगलाचरण किया। अध्यक्षा सोहनी देवी सालेचा ने सभी महिला मंडल की बहनों का स्वागत किया। उपासिका लीलादेवी सालेचा ने कहा कि एक चिटी गिरते-पड़ते भी अपना काम करती है, रुकती नहीं। हम तो पंचेंद्रिय प्राणी हैं, हम तो अपनी संकल्प शक्ति से कोई भी काम कर सकते हैं।

मंत्री ममता मेहता ने कहा कि हर व्यक्ति के जीवन में संकल्प होना जरूरी है। संकल्प के बिना जीवन दिशाहीन होता है। उपासिका मोहनी देवी संकलेचा ने कहा कि यदि अनपढ़ व्यक्ति के मन चाह हो जाए, हमें थोकड़े या कुछ सीखना है तो वह एक अक्षर, एक बोल लेकर भी सागर से गागर भर सकती है। कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष नितु देवी सालेचा ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष अरुणा डोसी ने किया। बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

प्रेक्षावाहिनी द्वारा प्रेक्षाध्यान का विशेष कार्यक्रम

शाहीबाग, अहमदाबाद।

प्रेक्षावाहिनी, शाहीबाग अहमदाबाद व तेरापंथ सेवा समाज द्वारा ध्यान-कक्ष में प्रेक्षाध्यान का विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शुभारंभ मंगलाचरण, प्रेक्षा गीत से विमल बाफना ने किया।

प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने दीर्घ श्वास का महत्त्व बताते हुए कहा कि जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रतिदिन जीवन की प्रयोगशाला बने। जवेरीलाल संकलेचा ने प्रेक्षाध्यान का सुंदर प्रयोग करवाया। धर्मेंद्र कोठारी ने त्रिपदी वंदना करवाई। मंगल भावना सुरेश मुणोत व तेरापंथ सेवा समाज अध्यक्ष नानालाल कोठारी ने प्रेक्षाध्यान का अर्थ बताते हुए आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन जवेरीलाल संकलेचा ने किया। ऑफलाइन १८ साधकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

✦ बाहर के मित्र भी उपयोगी बन सकते हैं। भीतर के मित्र-अहिंसा आदि परम उपयोगी होते हैं।
—आचार्यश्री महाश्रमण

गणतंत्र दिवस के विविध आयोजन

गदग

गणतंत्र दिवस पर गदग महिला मंडल द्वारा कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण किया गया। सभा के अध्यक्ष सुरेश कोठारी, मंत्री जितेंद्र जीरावला, तेयुप अध्यक्ष कमलेश जीरावला, मंत्री अमित गांधी मेहता व महिला मंडल व कन्या मंडल उपस्थित थे। राष्ट्रगान का संगान किया गया।

लिंगायत समाज के मेंबर ने तिरंगे से सजी हुई अपनी वाहन लेकर विशेष उपस्थिति दर्ज करवाई।

उधना

तेरापंथी सभा, उधना के निर्देशन में किशोर मंडल द्वारा गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम संचालन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की गई। उसके पश्चात सभा अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। किशोर मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई।

महासभा से अनिल चंडालिया, महिला मंडल अध्यक्ष जसू बाफना, ज्ञानशाला संयोजिका उषा आंचलिया द्वारा सभी को संबोधित किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रस्तुति दी गई। अंत में आभार किशोर मंडल संयोजक नमन आंचलिया द्वारा किया गया। पूरे कार्यक्रम का संचालन किशोर मंडल प्रभारी वरुण बोथरा एवं किशोर मंडल संयोजक कुशल चंडालिया द्वारा किया गया।

चेन्नई, माधावरम्

आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल, माधावरम ने गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह से मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि स्क्वाड्रन लीडर सीएच त्रिशूल (फाइटर पायलट, भारतीय वायु सेना) और पदाधिकारियों का स्कूल बैंड द्वारा स्वागत से हुआ। जिसके बाद में प्रार्थना गीत का सामूहिक संगान हुआ।

प्रधानाचार्य जया प्रसाद सभी गणमान्य व्यक्तियों को मंच तक लेकर गए। जिसके उपरांत मुख्य कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत भाषण से हुई। मुख्य अतिथि स्क्वाड्रन लीडर सीएच त्रिशूल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। ट्रस्ट अध्यक्ष तनसुखलाल नाहर ने माननीय मुख्य अतिथि स्क्वाड्रन लीडर सीएच त्रिशूल को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने अपने आधिकारिक भाषण में छात्रों को सशक्त बल में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

अध्यक्ष तनसुखलाल नाहर और महा संवाददाता अशोक बोहरा ने तमिलनाडु की राज्य शिक्षा विभाग द्वारा बनाई गई तमिलनाडु शिक्षा नीति उच्च स्तरीय समिति के सदस्य के रूप में चुने जाने पर प्रधानाचार्य जया प्रसाद को स्मृति चिह्न और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया। धन्यवाद ज्ञापन बे बाद राष्ट्रगान के साथ समारोह समाप्त हुआ। अध्यक्ष ने कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ सभा संस्था द्वारा संचालित महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में गणतंत्र दिवस अत्यंत उत्साह व धूमधाम के साथ मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जसराज चोरड़िया एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता शुभकरण चोरड़िया ने की। समारोह में बालकों की विभिन्न प्रस्तुतियों ने मन मोह लिया।

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर मदनलाल टोडरवाल ने समागत अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन किया। तेरापंथ धर्म की सभी संस्थाओं के अध्यक्ष-मंत्री एवं उनकी टीम ने बच्चों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए उत्साहवर्धन किया। बच्चों की प्रतिभा को उजागर करती रचनात्मक कार्यों की रोचक प्रदर्शनी लगाई गई।

बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर सरस्वती माँ की आराधना की गई। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि नन्हे-नन्हे बालकों की जिमनास्टिक प्रस्तुति ने मन मोह लिया। मात्र ४ से ५ वर्ष के बालकों ने भी शारीरिक व्यायाम पीटी का प्रदर्शन किया। प्रिंसिपल दीपा पेशवानी ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

राजाजीनगर

गणवतंत्र दिवस के अवसर पर तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर श्रीरामपुरम द्वारा रियायती दर पर पूर्ण रक्त गणना, लिपिड प्रोफाइल, थाइरॉइड प्रोफाइल, लिवर प्रोफाइल, किडनी प्रोफाइल एवं एलेक्ट्रोलयट्स लगभग ३६ प्रकार की विभिन्न जाँचें की गई।

शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। शिविर में कुल ६६ सदस्य लाभान्वित हुए। तेयुप अीम द्वारा उपस्थित लाभार्थियों को एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाएँ एवं विशेषज्ञ डॉक्टरों उपलब्धता से अवगत करवाया।

शिविर को सुव्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टाफ दिव्या, दीपाश्री, पवन, बहादुर एवं तेयुप से कमलेश चोरड़िया, अरविंद दुगड़, अभिषेक पीपाड़ा एवं राजेश देरासरिया ने विशेष श्रम नियोजित किया।

चंडीगढ़

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारत की तरक्की का आधार हमारा संविधान है। १५ अगस्त, १६४७ को आजादी मिली थी, लेकिन भारत का गणराज्य इसके करीब ढाई साल बाद २६ जनवरी, १६५० को बना। इसी दिन हमें वो हथियार या फिर कहें आधार मिला, जिसको आधार बनाकर आज भारत दुनिया का नेतृत्व करने की हैसियत में आ गया है। वो आधार था हमारा संविधान। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन तुलसी सभागार में गणतंत्र दिवस पर आयोजित विशेष कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि इस दिन हर भारतीय को अपने देश में शांति, सौहार्द और विकास के लिए संकल्पित होना चाहिए। कर्तव्य-पालन के प्रति सतत जागरूकता से ही हम अपने अधिकारों को निरापद रखने वाले गणतंत्र का पर्व सार्थक रूप में मना सकेंगे।

साउथ हावड़ा

गणतंत्र दिवस पर तेयुप द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम महाप्रज्ञ स्तंभ फोरशोर रोड पर मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। तेयुप के उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा ने उपस्थित सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

मुख्य अतिथि द्वारा ध्वजारोहण हुआ एवं सभी ने राष्ट्रगान का संगान सामूहिक रूप से किया। मुख्य अतिथि साउथ हावड़ा तेरापंथ सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, महिला मंडल उपाध्यक्ष अंजू चोरड़िया, टीपीएफ अध्यक्ष मनोज सेठिया, अणुव्रत समिति से कोषाध्यक्ष दीपक नखत, साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने वक्तव्य रखे।

कार्यक्रम में ३० युवकों एवं किशोरों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री अमित बेगवानी ने किया एवं आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कोषाध्यक्ष एवं प्रभारी विजयराज पगारिया, संयोजक आदेश चोरड़िया का विशेष श्रम रहा।

अमराईवाड़ी

गणतंत्र दिवस पर कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान के साथ हुई। ज्ञानशाला के बच्चों ने कविता, गीत, स्पीच, डांस के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। कुछ बच्चे भारत माता, भगतसिंह, चाचा नेहरू विभिन्न स्वतंत्रता सेनानी बनकर आए। कुल २४ बच्चों ने देशभक्ति के इस कार्यक्रम में भाग लिया।

उपासिका मंजू गेलड़ा ने बच्चों को मर्यादा महोत्सव, गणतंत्र दिवस व बसंत पंचमी के महत्त्व के बारे में बताया। सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सारिका टोडरवाल ने किया।

भीलवाड़ा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, भीलवाड़ा द्वारा संचालित मानव सेवा को समर्पित चिकित्सकीय जाँचों का उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर तथा तुलसी मानव सेवा केंद्र, भीलवाड़ा पर गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर सभाध्यक्ष जसराज चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, एटीडीसी के राष्ट्रीय कोर कमिटी सदस्य गौतम दुगड़, अभातेयुप सदस्य कुलदीप मारू, टीपीएफ अध्यक्ष करणसिंह सिंघवी सहित अनेक सदस्यों एवं समाजजनों की उपस्थिति रही।

चेन्नई

तेयुप, चेन्नई के तत्त्वावधान में गणतंत्र दिवस पर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पूलल में देश भक्ति गीत एवं भारत माता की जय घोष के साथ ध्वजारोहण के कार्यक्रम की शुरुआत हुई। राष्ट्रगान के साथ तिरंगे को सलामी दी गई।

इस अवसर पर अभातेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रमेश डागा, तेयुप चेन्नई के अध्यक्ष विकास कोठारी, मंत्री संदीप मूथा, सहमंत्री कोमल डागा, एटीडीसी प्रभारी सुनील मूथा, सहप्रभारी प्रदीप सुराणा, राहुल धारीवाल, एटीडीसी स्टाफ टीम उपस्थित थे।

टीपीएफ के आयोजन

नि:शुल्क मैडिकल कैंप का आयोजन

जीन्द।

टीपीएफ द्वारा नि:शुल्क मैडिकल कैंप का मिनाक्षी जैन अस्पताल में आयोजित किया गया। इस कैंप में १८८ मरीजों के स्वास्थ्य की जाँच विशेष डॉक्टरों द्वारा की गई। इस कैंप में सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टर द्वारा मरीजों की नि:शुल्क रक्त जाँच, शुगर जाँच, हृदय जाँच, अल्ट्रासाउंड जाँच, ब्लडप्रेशर की जाँच की गई।

काफी बड़ी संख्या में मरीजों ने जाँच करवाई। डॉ० अभिनव अग्रवाल विशेष यूरूलोजी, डॉ० सुरेश जैन बाल रोग विशेषज्ञ, डॉ० अनिल जैन सर्जरी विशेषज्ञ, डॉ० बनीश गर्ग हड्डी रोग विशेषज्ञ ने मरीजों की जाँच की।

इस अवसर पर टीपीएफ, जीन्द के अध्यक्ष सीए सचिन जैन, मंत्री आशु जैन, भीम सिंह चहल, विपिन जैन, बी०एस० गर्ग, संदीप जैन आदि ने कैंप को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाई।

उत्कर्ष कैरियर काउंसिल कार्यशाला का आयोजन

जीन्द।

टीपीएफ, जीन्द द्वारा उत्कर्ष कैरियर काउंसिल कार्यशाला का आयोजन सरकारी स्कूल गतौली में किया गया। इस कार्यशाला में सौ बच्चों ने भाग लिया। डॉ० श्रुति जैन ने कार्यशाला में मुख्य वक्ता की भूमिका निभाई। उन्होंने बच्चों को संघ लोक सेवा, वकालत, सीए, डॉ० पुलिस, सेना आदि में कैरियर किस प्रकार बना सकते हैं, इसके बारे में बताया।

इस अवसर पर टीपीएफ, जीन्द के अध्यक्ष सीए सचिन जैन, डॉ० अनिल जैन, डॉ० बनीश गर्ग, विपिन जैन, सौरभ जैन, संदीप जैन आदि टीपीएफ, जीन्द के सदस्य उपस्थित रहे।

✦ नशे से शारीरिक व मानसिक बीमारियों से ग्रस्त होकर अस्वस्थ भी हो सकता है। नशे की आदत कभी लगे ही नहीं, इस दृष्टि से जागरूक रहें।
– आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा महोत्सव के विविध आयोजन

कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में १५९वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन तेरापंथी सभा, कोलकाता द्वारा महासभा भवन प्रज्ञा समवसरण में किया गया। उत्तर हावड़ा से मर्यादा रैली प्रारंभ होकर महासभा भवन में पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

इस अवसर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म का एक धार्मिक संगठन है–तेरापंथ तेरापंथ एक प्राणवान धर्मसंघ है। जिसका अतीत गौरवशाली, वर्तमान गतिमान व भविष्य उज्ज्वल है। आज्ञा, मर्यादा, अनुशासन प्राण है। इस संघ के प्राण देवता संस्थापक आचार्य भिक्षु हुए। उन्होंने संघ को दीर्घजीवी व तेजस्वी बनाने के लिए प्रथम मर्यादा पत्र वि०सं० १८३२ में व अंतिम मर्यादा पत्र वि०सं० १८५९ में लिखा। मर्यादा पत्र को आधार बनाकर चतुर्थ आचार्यश्री जयाचार्य ने वि०सं० १९२१ में मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ किया।

मुनि जिनेश कुमार जी ने आगे कहा कि मर्यादाएँ बंधन नहीं बल्कि जीवन निर्माण की आधारशिला होती हैं। मर्यादा वह मशाल है जो जिंदगी को जगमगा देती है। मर्यादा वह पतवार है जो मझधार में डगमगाती जीवन नौका को पार लगा देती है। मर्यादा जीवन का शृंगार व सुरक्षा कवच है। जिस प्रकार प्रकृति में मर्यादा समाहित है उसी प्रकार व्यति के जीवन में भी मर्यादा का होना आवश्यक है।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर अतिथि महेंद्र अग्रवाल (तृणमूल कांग्रेस, हावड़ा जिला उपाध्यक्ष), तेरापंथी महासभा के आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा, जैन श्वेतांबर तेरापंथ विद्यालय सोसायटी के अध्यक्ष भीखमचंद पुलिया, मित्र परिषद के अशोक बैंगानी, तेयुप, कोलकाता मेन के अध्यक्ष ऋषभ सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथी सभा, कोलकाता अध्यक्ष अजय भंसाली ने स्वागत भाषण देते हुए अपने विचार व्यक्त किए। टीपीएफ के सदस्यों ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं मध्य कोलकाता के मंगलाचरण से हुआ। आभार ज्ञापन मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। पार्षद महेश शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे। अतिथियों का सभा द्वारा सम्मान किया गया।

गांधीनगर

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में १५९वाँ मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि बिखरते मूल्य मानकों के बीच जहाँ परिवार के मुखिया की, समाज, धर्म और राजनैतिक क्षेत्र में अगुआओं की कोई नहीं सुनता, उनके नेतृत्व को स्वीकृत नहीं करता, वहाँ तेरापंथ का ऐक्य और अनुशासन एक सीख के रूप में अपनी गौरवशाली परंपरा के साथ उपस्थित है। तेरापंथ का एक नेतृत्व, एक आचार्य परंपरा आज के विशृंखलित होते मूल्यों के बीच एक प्रकाश किरण है, मील का पत्थर है। साध्वीश्री जी ने मर्यादाओं को विस्तृत रूप में बताया।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि जीवन विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण उपहार है–मर्यादा। मर्यादा का उल्लंघन विध्वंस का सूचक है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभा जी ने जीवन में मर्यादा की महत्ता को बताते हुए गीतिका प्रस्तुत की। साध्वीवृंदों ने लेख पत्र का वाचन किया। तत्पश्चात संघगान का संगान किया गया।

मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद लहरसिंह सिरोया ने कहा कि गुरुदेव आचार्य तुलसी के चातुर्मास के बाद बैंगलोर शहर विशेष प्रगति की ओर बढ़ा। उन्होंने कहा कि राजनीति में भी मैं हमेशा जैन समाज के आदर्शों और मर्यादाओं का पालन करने का प्रयास करता हूँ।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। प्रज्ञा संगीत सुधा की टीम ने मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सुरेश मुणोत ने किया। ज्ञानशाला के बच्चों और प्रशिक्षिकाओं ने नाटिका की प्रस्तुति दी। बैंगलोर की सभी महिला मंडल एवं मांड्य महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, मांड्या सभा मंत्री विनोद भंसाली, ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश बाबेल सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री गौतम मांडोत ने किया। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष कन्हैयालाल सिंधी ने किया।

भागलपुर

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में १५९वाँ मर्यादा महोत्सव त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने बिहार-नेपाल के श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति आलोक, तैजस एवं अध्यात्म की संस्कृति है। जहाँ अनुशासन में रहने वाला विकास को प्राप्त हो जाता है। कलुषता से कलयुग का, स्वाधीनता से सतयुग का, नव्यता से नवीनता का निर्माण होता है।

तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने मर्यादा का निर्माण करके तेरापंथ धर्मसंघ के लिए सतयुग की बहार ला दी। मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाओं को महोत्सव का रूप देने वाले थे–चतुर्थ आचार्य जीतमल जी, जिन्होंने नूतन आयाम देकर संघ को शिखरों चढ़ाया। आचार्य भिक्षु एवं जयाचार्य में गति-मति-स्थिति में अनेक समानताएँ देखने को मिलती हैं। ये समानताएँ समता के शिखर पुरुष महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी में स्पष्ट परिलक्षित हैं।

इस अवसर पर साध्वी सुधांशुप्रभा जी ने अपने विचार रखे। स्थानीय महिला मंडल, तेयुप, ज्ञानशाला के बच्चों ने पृथक्-पृथक् रूप से मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। नेपाल-बिहार सभा के अध्यक्ष भैंरूलाल भूरा, मंत्री वीरेंद्र संचेती, महासभा के बिहार प्रभारी अनोप बोथरा, स्थानीय सभाध्यक्ष उज्जैन मालू, गुलाबबाग सभाध्यक्ष सुशील संचेती, भट्टा बाजार मंत्री नवरत्न दुगड़, फारबिसगंज सभामंत्री बंटी राखेचा, कटिहार सभाध्यक्ष बुधमल संचेती, अनमोल बैद, आशीष बैद, अमरचंद बैद, रवि बैद, अनुभवी मंडल आदि ने अपने विचार वक्तव्य एवं गीत के माध्यम से रखे।

कार्यक्रम का प्रारंभ स्मृति मालू एवं भावना बैद के मंगल संगान से हुआ तथा संचालन स्थानीय सभा मंत्री पवन सेठिया ने किया। इस कार्यक्रम में कटिहार, गुलाबबाग, खुशकीबाग, छातापुर, भट्टा-बाजार, फरबिसगंज, मुरलीगंज, देवधर, अररिया, धमदाह आदि क्षेत्र संभागी बने।

गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण कार्यक्रम

पूर्वांचल-कोलकाता

गणतंत्र दिवस के अवसर पर तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता के सदस्यों ने तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता के लेकटाउन कार्यालय में ध्वजारोहण का कार्यक्रम मनाया। ध्वजारोहण के उपरांत उपस्थित सभी सदस्यों ने राष्ट्रगान का संगान किया। भारत माता की जय और वंदे मातरम के नारों से पूरा वातावरण गुंजायमान हो गया। तेयुप, पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव खटेड़ ने ध्वजारोहण करने के पश्चात उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया एवं देश के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया।

ध्वजारोहण कार्यक्रम में उपस्थित थे अध्यक्ष राजीव खटेड़, मंत्री हेमंत बैद, पूर्व मंत्री धीरज मालू, सिद्धार्थ भंसाली, श्रेयांस भंसाली, हर्षित मालू, गजराज सेठिया, अरविंद गोटानी, नवीन दुगड़ आदि सदस्यगण।

भीलवाड़ा

गणतंत्र दिवस पर तेमम, भीलवाड़ा द्वारा रेलवे स्टेशन पर महिला मंडल द्वारा निर्मित कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अभातेमम, मीना बाबेल, मंत्री रेणु चोरड़िया, यशवंत सुतरिया, सुमन दुगड़, नीलम लोढ़ा, विनीता सुतरिया, विजया सुराणा, शोभना सिरोहिया, समता चौधरी, रोशन देवी बाफना, कन्या मंडल सह-संयोजिका प्रेक्षा नौलखा तथा सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि रेलवे प्रशासन के मुख्य अधिकारी एवं स्टेशन अधीक्षक दिनेश शर्मा, आर०पी० मीणा, राम लखन मीणा, ओ०पी० जागेटिया तथा पूरा स्टाफ इस कार्यक्रम में उपस्थित था।

तेमम की टीम, तेरापंथी सभा संस्था द्वारा संचालित महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में भी ध्वजारोहण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल हुई।

अणुव्रत आंदोलन का ७५वाँ अमृत महोत्सव वर्ष

चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर यात्रा के दौरान चेन्नई पधारे। चेन्नई आगमन पर अणुव्रत समिति, चेन्नई अध्यक्ष ललित आंचलिया ने टीम के साथ अभिनंदन किया। स्वागत स्वर में चेन्नई द्वारा संचालित गतिविधियों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

अणुविभा अध्यक्ष ने कहा कि जैनाचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन को ७५ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इसी को मद्देनजर रखकर राष्ट्रीय स्तर अणुव्रत अमृत महोत्सव पर इसके जन जाग्रति के लिए विशेष आयामों को रेखांकित किया। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।

मंत्री अरिहंत बोथरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर पूर्वाध्यक्ष संपतराज चोरड़िया, सुरेश कुमार बोहरा, संतोष कातरेला, अणुव्रत समिति, चेन्नई के सभी पदाधिकारी, सदस्य उपस्थित रहे।

फोन से नहीं अपितु मौन से हो सकता है...

(पृष्ठ १५ का शेष)

कान का उपयोग आध्यात्मिक संदर्भ में करें तो कान से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हो सकता है। फोन का तो दिव्य आत्माओं से संपर्क नहीं हो सकता पर मौन से कभी-कभी संपर्क विशेष भीतरी ज्ञान हो सकता है। दिव्य देवता तीर्थकरों के दर्शन करा सकते हैं। शास्त्रकार ने सुनने की बात बताई है, हम कान का बढ़िया उपयोग करें। दुरुपयोग से बचें, यह काम्य है।

आज बायतू प्रवास का अंतिम प्रवचन का कार्यक्रम हो रहा है। यहाँ से प्रस्थान भी करना है। बायतू का मर्यादा महोत्सव संबंधी अच्छा प्रवास भी हो गया। बायतू का हमारा प्रोग्राम समापन की ओर है।

मुनि रजनीश कुमार जी ने अपनी मंगलभावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ जैसा कोई पंथ नहीं है। तेरापंथ के आचार्य भी विशिष्ट होते हैं। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे ऐसा शासन मिला है, आगे के जन्मों में भी यही मिलता रहे। पूज्यप्रवर की पुण्याई से सारा कार्यक्रम सानंद संपन्न हो रहा है।

पूज्यप्रवर ने मुनि रजनीश कुमार जी के प्रति आशीर्वचन फरमाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

सम्यक् दर्शन संबोध कार्यशाला का आयोजन

बैंगलोर।
तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन गांधीनगर में साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'सम्यक् दर्शन संबोध कार्यशाला' आयोजित की गई। मंगलाचरण साध्वी मेरुप्रभा जी और साध्वी दक्षप्रभा जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा द्वारा व्यक्त किया गया।

कार्यशाला के मुख्य प्रवक्ता बजरंग गोयल ने कहा कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति शाश्वत सुख और विकास चाहता है। उस सुख की चाह प्राप्त करने का पहला रास्ता है तत्त्व को जानना और दूसरा तत्त्व को मानना, तीसरा उसका आचरण करना। यही सम्यक्त्व दर्शन है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि सम्यक् दर्शन और मिथ्या दर्शन यह दोनों आगमों के महत्त्वपूर्ण शब्द हैं। डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि सम्यक् दर्शन की प्राप्ति के बाद मोक्ष का आचरण आवश्यक हो जाता है। सम्यक्त्व आने के बाद व्यक्ति यदि संसार में है तो वह वैमानिक गति को प्राप्त होगा या फिर मोक्ष को। सोचने, समझने, देखने का तरीका बदला तो अपने आप जीवन की दशा-दिशा बदल जाती है।

आभार ज्ञापन पवन चोपड़ा द्वारा किया गया। सन् २०२२ में समण संस्कृति संकाय और अभातेयुप के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित सम्यग् दर्शन कार्यशाला के प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किए गए। मंच संचालन रमेश सालेचा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संयोजक विवेक मरोठी की उपस्थिति थी। कार्यशाला में तेयुप साथियों व श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति सराहनीय रही।

सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह

सिटी लाइट, सूरत।
अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, सूरत द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश की अध्यक्षता में आगाज हुआ।

अतिथि विशेष सीपीएस राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी, सीपीएस नेशनल ट्रेनर बबीता रायसोनी, गरिमामय उपस्थिति सभा अध्यक्ष नरपत कोचर, महिला मंडल अध्यक्षा राखी बैद, टीपीएफ अध्यक्ष अखिल मारू तथा अभातेयुप परिवार भी उपस्थित रहे।

तेयुप, सूरत अध्यक्ष अमित सेठिया, मंत्री अभिनंदन गादिया, तेयुप पदाधिकारी, कार्यकर्ता, सीपीएस टीम तथा सीपीएस के २ बेच के ६२ संभागियों ने विभिन्न-विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी। संभागियों के परिजनों ने भी उत्साहवर्धन हेतु अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

मेवाड़ उत्सव-२०२३ में नि:शुल्क बोन मिनरल डेंसिटी कैंप

राजाजीनगर।
तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम एवं मेवाड़ जैन सेवा संस्था के संयुक्त तत्त्वावधान में पैलेस ग्राउंड प्रिंसेस श्राइन में आयोजित मेवाड़ उत्सव-२०२३ में नि:शुल्क बोन मिनरल डेंसिटी कैंप का आयोजन किया गया। ५० वर्ष की आयु से ऊपर के पुरुषों एवं महिलाओं की हड्डियों की जाँच की गई।

मणिपाल हॉस्पिटल ऑर्थोपेडिक डॉ० शशि किरण द्वारा सभी लाभार्थियों की जाँच कर उचित परामर्श दिया। लगभग ५ घंटे तक चले इस कैंप में कुल ९८ लाभार्थी लाभान्वित हुए।

इस अवसर पर भाजपा राज्यसभा सांसद लेहरसिंह सिरोया ने एटीडीसी स्टॉल पर पधारकर डॉक्टर से मुलाकात की। तेरापंथ सभा ट्रस्ट, राजाजीनगर के परामर्शक ललित मांडोत, विजयनगर तेरापंथ सभा अध्यक्ष कैलाश गांधी, नवरतन दक, राजस्थान मित्र मंडल अध्यक्ष नेमीचंद दलाल, तेयुप परामर्शक चंद्रेश मांडोत सहित अनेक सदस्य एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। एमजेएसएस टीम के संपूर्ण सहयोग से कैंप सुव्यवस्थित आयोजित हुआ।

बैक पैकिंग कार्यक्रम का आयोजन

बेंगलुरु।
अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, बेंगलुरु के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा बैक पैकिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एक दिवसीय कार्यक्रम मंदारगिरी हिल्स में ट्रेकिंग गतिविधि संपादित की।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में १८ किशोर, ६ युवक परिषद् के कार्यकर्ता की सहभागिता रही। किशोर मंडल के संयोजक आदित्य मांडोत की विशेष सहभागिता रही। तेयुप अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम के संयोजक की भूमिका आयुष पोखरणा और प्रणव मांडोत ने निभाई।

सेवा की ओर बढ़ते कदम

विजयनगर।
तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत परिवार से गौतमचंद दुगड़ की माताजी पानी देवी की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में नेत्रहीन व अनाथ बच्चों के नाश्ते और पुस्तक, स्टेशनरी, हैंड वाश साबुन आदि की व्यवस्था की गई।

तेयुप, विजयनगर, कार्यकारिणी सदस्य राहुल कवाड़िया, अंकित दुगड़ तथा दुगड़ परिवार ने उपस्थित होकर बच्चों के सेवा कार्य में सहयोगिता निभाई।

बैंगलुरु।
तेयुप, बैंगलुरु के लोकोपकार मासिक सेवा आयाम के तहत कुमारा पार्क स्थित मातृश्री मनोविकास केंद्र में मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों को अन्न दान की सेवा की।

कार्यक्रम में अध्यक्ष प्रदीप चौपड़ा, निवर्तमान अध्यक्ष विनय बैद, कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा, भरत रायसोनी, पंकज भंडारी, संयोजक अंकित छाजेड़ आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रायोजक संजीव कुमार-विनय कुमार बैद, सुजानगढ़-बैंगलुरु थे।

हम मर्यादा की रक्षा करेंगे तो मर्यादा हमारी...

(पृष्ठ १६ का शेष)

आज हमने बायतू में मर्यादा महोत्सवकालीन प्रवेश के रूप में प्रवेश किया है। लोग कई पदार्थों को भी मंगल के रूप में प्रस्तुत करते हैं। धर्म उत्कृष्ट मंगल है। पदार्थ या मुहूर्त देखना उत्कृष्ट मंगल नहीं है। अहिंसा, संयम और तप धर्म मंगल है। ये तीनों हैं तो फिर मंगल दूर रह ही नहीं सकता।

अहिंसा ऐसा धर्म है, जो शांतिदायी है। परम मोक्ष की ओर ले जाने वाला अहिंसा धर्म होता है। सभी प्राणियों को अपने समान समझो। मुझे सुख प्रिय है, तो आपको भी सुख प्रिय है। मुझे दुःख अप्रिय है, तो आपको भी दुःख अप्रिय है। मैं सुख पाना चाहता हूँ, तो मैं दूसरे के सुख में बाधा डालने का प्रयास क्यों करूँ।

मर्यादा व्यवस्था के लिए संयम की चेतना भी चाहिए। हम मर्यादा की रक्षा करेंगे तो मानो मर्यादा हमारी रक्षा करेगी। कल २६ जनवरी भी है और कल हमारा मर्यादा महोत्सव भी शुरू हो रहा है। २६ जनवरी भी गणतंत्र-मर्यादा-संविधान का दिवस है। स्वतंत्रता के साथ स्वच्छंदता न हो इसलिए न्याय तंत्र की अपेक्षा है। संविधान, मर्यादा और संयम अपेक्षित होता है।

हमारे यहाँ मर्यादावली है। वे मर्यादाएँ हमारे जीवन में हों तो वे जीवंत रहेंगी। हमारा धर्मसंघ परम पूज्य भिक्षु स्वामी से संबंधित है। मर्यादा महोत्सव हमारे चतुर्थाचार्य जयाचार्य की देन है। बालोतरा से प्रारंभ हुआ यह महोत्सव आज बायतू में होने जा रहा है।

तप भी मंगल है। धर्म नीति हो या राजनीति; सेवा का लक्ष्य होता है, वह भी एक तरह की साधना-तपस्या है। तपस्या भी हमारे जीवन में रहे। हमारे साधु-साध्वियाँ, समणियाँ संन्यास का जीवन जी रही है। मुमुक्षु बहनें भी उसके अंतर्गत दीक्षा ले रही हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि चंद्रमा रात्रि में सुशोभित होता है। दीपक प्रकाश के बिना, सरोवर कमल के बिना और दिन सूर्य के बिना सुशोभित नहीं होता। राजा न्याय नीति से प्रतिष्ठित होता है। विवेक के बिना दान की शोभा नहीं होती। ठीक इसी प्रकार सद्गुरु के बिना यह संसार भी सुशोभित नहीं होता। हम इस युग में सौभाग्यशाली हैं कि हमें एक ऐसे गुरु प्राप्त हुए हैं, जो अध्यात्म के एक उच्च आसन पर आसीन हैं जो श्री, धी, धृति, शांति, शक्तिसंपन्न हैं। इन सबसे संपन्न व्यक्ति सबके लिए प्रणम्य बन जाता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में मुनि रजनीश कुमार जी ने बायतू की ओर से अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वी ज्ञानयशाजी, साध्वी पार्श्वप्रभाजी, साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

बायतू समाज द्वारा पूज्यप्रवर का नागरिक अभिनंदन किया गया। पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदन में मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति अध्यक्ष रतनलाल लोढ़ा, गौतम चंद छाजेड़, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, महिला मंडल, कन्या मंडल ने गीतिका में अपनी भावना व्यक्त की। बायतू चीमनजी सरपंच गोमाराम गोटलिया, बायतू भीमजी सरपंच, बायतू भोपजी के सरपंच नवनीत चौपड़ा, केंद्रीय राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि मैं इस धरा पर महान संत आचार्यश्री महाश्रमण जी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ। मेरे जीवन में आया बदलाव आपकी प्रेरणा का ही प्रतिफल है। आपकी वाणी सबका कल्याण करने वाली है। आपकी कृपा इस क्षेत्र पर सदैव बनी रहे। राजस्थान सरकार के मंत्री हेमाराम चौधरी ने कहा कि मैं परम वंदनीय आचार्यश्री महाश्रमण जी का बायतू की धरती पर हार्दिक स्वागत करता हूँ। आप पर जनता का अटूट विश्वास है। मैं आपके प्रवचनों को सुनकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। बायतू के विधायक हरीश चौधरी ने कहा कि यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमारे क्षेत्र में आपश्री का मंगल पदार्पण ऐसे भव्य महोत्सव के लिए हुआ है। मैं समस्त जनता की ओर से आपका अभिनंदन करता हूँ। बाड़मेर के विधायक मेवाराम जैन ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का मैं बाड़मेरवासियों की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूँ। आप द्वारा दी जा रही अहिंसा और सद्भावना की प्रेरणा जन-जन के लिए आवश्यक है। आप हमारी भूमि पर पधारे, इसके लिए मैं आपके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। समाज सेविका रूमा देवी, जिला महामंत्री बालाराम ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आज बायतू प्रवेश पर नागरिक अभिनंदन का कार्यक्रम रहा, अनेक गणमान्य लोग उपस्थित हैं। सभी में अहिंसा-मर्यादा के संस्कार रहें और दूसरों को भी ये संस्कार देने का प्रयास करते रहें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आज्ञा और मर्यादा है तेरापंथ धर्मसंघ की एकता का आधार : आचार्यश्री महाश्रमण

बायतू, २७ जनवरी, २०२३

आचार्य भिक्षु के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा मंगल स्मरण से मर्यादा महोत्सव के द्वितीय दिवस का शुभारंभ हुआ। महामनीषी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ का मर्यादा महोत्सव समारोह का आज मध्यवर्ती दूसरा दिवस है।

हमारे धर्मसंघ में अनेक कार्यक्रम आयोजित होते हैं परंतु मर्यादा महोत्सव की अपनी महिमा है। हमारे धर्मसंघ का वार्षिक महोत्सव जैसा समारोह होता है। इस कार्यक्रम में दूर-दूर के क्षेत्रों में चातुर्मास करके साधु-साध्वियाँ सहभागी बन जाते हैं।

हमारे धर्मसंघ का इतिहास लगभग २६२ वर्षों का है। महामना आचार्य भिक्षु के द्वारा यह स्थापित है। उस समय उनको लगा कि क्रांति की अपेक्षा है। शांति में रहने के लिए क्रांति को छोड़ दें, ये भी एक चिंतनीय बात हो सकती है। जरूरत हों तो शांति में क्रांति भी करनी चाहिए। क्रांति में भी शांति रहे।

व्यावहारिक जगत में निमित्तों का भी अपना प्रभाव होता है। पर मेरे विचार में निमित्तों का मूल्य कम है, उपादानों का मूल्य ज्यादा है। अनेक प्रसंगों में उपादान महत्त्वपूर्ण है। चित्त-समाधि में उपादान महत्त्वपूर्ण है। उपादान मजबूत है, तो निमित्त का वहाँ वश नहीं चलता। समतारूपी उपादान नहीं है, तो मन में अशांति हो सकती है। हमारी चित्त समाधि हमारे हाथ में रहनी चाहिए। परावलंबिता न नहीं रखनी चाहिए।

हमारा संघ के प्रति समर्पण का भाव हो। हम दूसरों को साता पहुँचाएँगे तो हमें साता अवश्य मिलेगी। हमारा दृष्टिकोण उदार हो। सम्यक् दृष्टिकोण के बिना सम्यक् चारित्र हो ही नहीं सकता। हम सब एक धर्मसंघ के सदस्य हैं। अच्छा प्राप्त होने की संभावना है तो उसके लिए कुछ कठिनाइयों को भी झेलने का सामर्थ्य रखें। यदि आचार्य

भिक्षु घबरा जाते तो ये मर्यादा महोत्सव कहाँ होता? धर्मसंघ कहाँ होता?

हमारे धर्मसंघ में आज्ञा का बड़ा महत्त्व है। आगम का स्वाध्याय हमारी खुराक है। आगम-स्वाध्याय समयानुसार चलता रहे। प्रातःकालीन समय स्वाध्याय में लगे तो अच्छा उपयोग हो सकता है। मुनि मोहनलाल जी 'आमेट' बायतू से जुड़े थे, वे अच्छा गीत गाते थे। हमारा समय प्रबंधन अच्छा रहे।

आगम संपादन के राष्ट्रपति- प्रधानमंत्री आचार्य तुलसी थे। सहयोगी आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी थे। आगम पढ़ने से जानकारियाँ मिल सकती हैं। आगम पाठ से ज्ञान की वृद्धि और वैराग्य की समृद्धि मिल सकती है। हम आज्ञा के प्रति जागरूक रहें। आगम में आचार-गोचरी संबंधित कितनी बातें मिल सकती हैं। उपासक श्रेणी व श्रावक आगम के अनुवाद को भी पढ़ सकते हैं।

हमारी संघीय मर्यादाएँ हैं। कुछ मर्यादाएँ तो स्तंभ हैं। सर्व साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें यह तो हमारा महास्तंभ है। मर्यादाएँ हमारी एकता का आधार हैं। मर्यादाओं के प्रति जागरूकता रहे। मर्यादाएँ सुरक्षा कवच एवं त्राण हैं।

श्रावक-श्राविकाओं की भी अपनी मर्यादाएँ हैं। श्रावक संदेशिका पढ़ने से जानकारियाँ एवं पथदर्शन मिल सकता है। आचार्य को हमारे धर्मसंघ में उच्च स्थान दिया गया है। आचार्य के निर्देश, आज्ञा, इंगित की आराधना और उनकी सेवा-सुश्रुषा होती रहे।

आचार्य को हमारे धर्मसंघ में जितना अधिकार दिया गया है, उतना ही भार भी दिया गया है। आचार्य भी अपने कार्य में जागरूकता रखें। आचार्य को भी समर्पित धर्मसंघ मिले तो वह अपना कार्य कर सकता है। व्यवस्था अच्छी रह सकती है। आचार्य अपने दायित्व के भार को भी अनुभव करता रहे।

संघ हमारा आश्रय है। एक व्यवस्थित धर्मसंघ हमें प्राप्त है; यह नंदनवन है। संघ का विकास-हित हो, व्यक्तिगत हित गौण है। संघ भी धर्म के लिए है। धर्म को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। शरीर तो एक दिन छूटने वाला है, पर संघ हमारा न छूटे। आत्मा, संघ और शरीर तीन बातें हैं। तीनों का हित हो। संवर निर्जरा की साधना चलती रहे। संघ की सेवा करते रहें।

सेवा शरीर से हो सकती है और दिमाग से भी प्रशासन-प्रबंधन से सेवा दे सकते हैं। ज्ञान देना भी सेवा है। अनेक रूपों से संघ-सेवा हो सकती है। न्यारा में तो सेवा का और अधिक दायित्व होता है। हम औचित्य के अनुसार संघ-सेवा का प्रयास करते रहें। उपासक श्रेणी के पास भी सेवा का काम है। संघ हमारा एक है। सेवाएँ अनेक हैं।

आज ही के दिन आचार्यश्री तुलसी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी को आचार्य पद पर स्थापित किया था, वह एक अद्भुत प्रसंग था कि अपने गुरु के द्वारा उनका पदाभिषेक हुआ था। मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को वंदन करता हूँ। मुझे भी लगभग १३ वर्ष तक युवाचार्य के रूप में उनके चरणों में रहने का अवसर मिला था। आचार्य महाप्रज्ञ जी का व्यक्तित्व महान था। उनमें महत्ता थी। मुझे भी उन्होंने खुला रहकर कार्य करने का अवसर प्रदान कराया था। उनका ज्ञान विलक्षण था। यात्राएँ भी कीं। हमें अच्छी प्रेरणाएँ मिलें, यह काम्य है।

आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त मर्यादाएँ हैं अनमोल धरोहर - मुख्य मुनि डॉ० महावीर कुमार

मुख्य मुनि डॉ० महावीर कुमार जी ने कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें इतने विधिवेत्ता, निपुण आचार्य भिक्षु जैसे आद्यप्रवर्तक मिले। सत्य के दरवाजे खोलने वाला तेरापंथ धर्मसंघ मिला। आचार्य भिक्षु मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्य थे। आचार्य भिक्षु की मर्यादाएँ हमें अनमोल धरोहर के रूप में प्राप्त हैं। उन्होंने जो शुद्ध आचार-विचार की प्ररूपणा की थी वो आज भी हमारे धर्मसंघ में प्रवर्धमान है। आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त धारा को हमारे पूर्वाचार्यों ने सहस्रगुणित करने का प्रयास किया। वर्तमान में भी वह शत्-सहस्रगुणित हो प्रवाहित हो रही है।

पूज्य जयाचार्य ने उनकी मर्यादाओं को एक महोत्सव के रूप में मनाने का प्रयास किया जो वरदान बन गया है। मर्यादा महोत्सव के अवसर पर हमें परमपूज्य द्वारा ऐसी प्रेरणा मिलती है कि वह जोश हमें मर्यादाओं में और जागरूक रहने की शक्ति प्राप्त होती है। मर्यादा महोत्सव महा हाजरी का-सा अवसर बन जाता है। 'भिक्षु गण में एक गुरु' गीत का सुमधुर संगान करवाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष गौतम छाजेड़, पद्मचंद पटावरी, मुमुक्षु बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। बायतू तेरापंथ समाज ने मर्यादा महोत्सव गीत प्रस्तुत किया। शांतिलाल सांड, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री अनीता बाधमार, निधि सालेचा, सोहनलाल बालड़, मदन-राधा बालड़ ने गीत द्वारा अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी द्वारा किया गया।

फोन से नहीं अपितु मौन से हो सकता है दिव्यात्मा से संपर्क : आचार्यश्री महाश्रमण

बायतू, ३० जनवरी, २०२३

१५९वें मर्यादा महोत्सव की संपन्नता के पश्चात आचार्यप्रवर धवल सेना के साथ ५ किमी का विहार कर रामसरिया बायतू भोपश्री के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पधारे। संयम के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि श्रवणेंद्रिय हमारे पास है। पंचेन्द्रिय प्राणियों में श्रोतेन्द्रिय भी होती है। बिना श्रोतेन्द्रिय के पंचेन्द्रियत्व नहीं हो सकता। कान के द्वारा हम अनेक बातों को सुनकर जान लेते हैं।

कान और आँख दोनों में तुलना करनी हो तो दोनों में ज्यादा उपयोगी एक दृष्टि से आँख हो सकती है। बिना श्रोतेन्द्रिय के तो कई बार अन्य तरीके से बात जानी जा सकती है। पर आँख न हो तो फिर दुनिया में अंधेरा ही अंधेरा है। आँख नहीं है, तो परवशता है। श्रवण शक्ति कमजोर है तो आँखों से जानकारी हो सकती है।

वैसे कान का भी महत्त्व होता है। श्रवण-शक्ति पटु होती है तो वह दूर से भी बात को पकड़ सकता है। कान का सदुपयोग करें। कान से पवित्र आर्ष वाणी, धर्म वाणी, गुरुवाणी सुनने का प्रयास करें। कानों से दूसरों के दुःख-दर्द को सुनकर उसके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करें, सांत्वना दें। मदद कर सकें तो मदद कर सामने वाले की तकलीफ दूर करने का प्रयास करें। वर्तमान में तो अनेक प्रकार से ज्ञान की बातें सुन सकते हैं।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

✦ सत्साहित्य चेतना की अच्छी खुराक है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ धर्मसंघ के महामहिम आचार्यश्री महाश्रमण का ससंघ मर्यादा महोत्सव के लिए मंगल प्रवेश

हम मर्यादा की रक्षा करेंगे तो मर्यादा हमारी रक्षा करेगी : आचार्यश्री महाश्रमण

बायतू, २५ जनवरी, २०२३

बाड़मेर जिले की मरुभूमि बायतू ग्राम में तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण एवं धवल सेना के पावन पदार्पण के अवसर पर आस्था, उत्साह और उमंग की त्रिवेणी चहुँओर प्रवाहित हो रही थी, क्योंकि तेरापंथ के मर्यादा पुरुषोत्तम अपनी धवल सेना के साथ मर्यादा का महोत्सव मनाने पधार रहे थे। तेरापंथ धर्मसंघ का एक महान पर्व मर्यादा महोत्सव जो अपने आपमें एक विशेष महत्त्व रखता है। तेरापंथ धर्मसंघ के महाकुंभ के नाम से विख्यात १५९वाँ मर्यादा महोत्सव इस बार सिवांची-मालाणी के क्षेत्र में आयोजित होने जा रहा है। बायतू मुनि मोहनलालजी 'आमेट' एवं मुनि रजनीश कुमार जी से जुड़ा क्षेत्र है।

मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपनी धवल सेना के साथ विशाल श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में मर्यादा महोत्सव क्षेत्र बायतू में प्रवेश किया।

मुख्य प्रवचन में महातपस्वी ने फरमाया कि मंगल आदमी को अभिष्ट होता है। वह अपना भी मंगल चाहता है और जो कोई प्रियजन आदि हैं, उनका भी मंगल चाहता है। दूसरों का मंगल चाहना उदारता की बात हो जाती है। कई बार यात्रा के लिए या स्वास्थ्य के लिए मंगलकामना की जाती है। मंगल के लिए प्रयास भी किया जाता है। विशेष उद्देश्य के लिए शुभ मुहूर्त भी देखा जाता है।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

बायतू में आयोजित 159वें मर्यादा महोत्सव की झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**